संस्कृत • हिन्दी • English

शिक्षा-वेदाङ्ग-श्रृंखला

SHIKSHA VEDANGA SERIES

वर्ण-विज्ञान-सूत्रम्

VARNA VIGYAN SUTRAM

वर्ण • ध्वनि • लिपि • अर्थ • व्यवहार

Varna • Dhvani • Lipi • Artha • Vyavahara

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श स ह

लेखक :

निरञ्जन प्रधान

NIRANJAN PRADHAN

Vedic Scholar • Brahmapur (Odisha)

प्रथम संस्करण | First Edition | 2082 VS

सूची-पत्र

भूमिका ..... १ - ६

Preface 7–10

आरम्भिक सूत्र ११-१५ (11-15)

प्रथम अध्यायः – ध्वनि-प्रकरणम् (Phonetics Section)

पाद १ – स्थान-प्रकरणम् (Place of Articulation) ..... १६-१९(16-19)

पाद २ – करणप्रकरणम् (Articulatory Instruments (Karaṇa)) ..... २०–२१(20-21)

पाद ३ – आभ्यन्तरप्रयत्नप्रकरणम् (Internal Effort) ..... २२- २३(22–23)

पाद ४ – बाह्यप्रयत्नप्रकरणम् (External Effort)..... २४- २३(24-26)

पाद ५ – स्थानपीडनप्रकरणम् (Pressure of Articulation) २७ (27)

पाद ६ –वृत्तिकार-प्रकरणम् (Commentary) .....२८- ३३(28-33)

पाद ७ – क्रमप्रकरणम् (Sequence).....३४-५६(34-56)

पाद ८ – नाभितलप्रकरणम् (Nābhi Region) ..... ५७- ६४(57-64)

द्वितीय अध्यायः – लिपि-शाखा

पाद १ – वर्णलिपि-प्रकरणम् (Letter-Script) .....६५-७०(65-70)

पाद २ – अङ्कलिपि-प्रकरणम् (Numeral)-Script ..... ७१- ७३(71-73)

ॐ

वर्णविज्ञानम्

ध्वनि-लिपि-आधारित

शिक्षा-वेदाङ्ग-ग्रन्थः

– निरञ्जन प्रधान

(शिक्षा-वेदाङ्ग-अध्येता)

ब्रह्मपुर (ओडिशा)

ॐ

मंगलाचरणम्

नटराजस्य डमरुर्ध्वनिरुदीरितः सदा, अग्निरूपा लिपिः प्रोक्ता वर्णार्थोऽभयमुद्रया।

गजहस्तः सदा ज्ञेयोऽध्ययनस्य प्रवर्तकः, उत्थितः पादो वेदः स्यात्

तान्त्रिकोऽपस्मारस्थितः। प्रभामण्डलमेवोक्तं लिपिविकासलक्षणम्॥

(नटराजः वर्णविज्ञानप्रतीकः।)

शिक्षा वेदाङ्ग ग्रन्थ की भूमिका

वेद भारतीय संस्कृति की प्राचीनतम एवं दिव्य ज्ञान-सम्पदा हैं। वे केवल धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं, अपितु जीवन के समग्र विज्ञान के मूल स्रोत हैं। वेदों का संरक्षण *श्रुति-परम्परा* द्वारा हुआ है, अर्थात् गुरु से शिष्य तक सुनकर और बोलकर ही यह ज्ञान प्रवाहित हुआ। अतः वेदों में **शुद्ध उच्चारण (शुद्धोच्चारण)** का अत्यन्त महत्त्व है। यदि उच्चारण में अल्पमात्र भी दोष हो जाए, तो मन्त्र का अर्थ परिवर्तित हो सकता है और उसका प्रभाव भी नष्ट हो सकता है।

इसी शुद्धता की रक्षा के लिए प्राचीन ऋषियों ने वेदों के सहायक अंगों–वेदाङ्गों–की रचना की, जिनमें *शिक्षा वेदाङ्ग* का स्थान अत्यन्त प्रमुख है। शिक्षा वेदाङ्ग मुख्यतः वर्णों के शुद्ध उच्चारण का विज्ञान है, जिसमें वर्णों की उत्पत्ति, स्थान, प्रयत्न, स्वर, मात्रा, बल, साम एवं सन्तान का सूक्ष्म विवेचन किया गया है।

इस ग्रन्थ का उद्देश्य शिक्षा-वेदाङ्ग के विभिन्न ग्रन्थों में बिखरे हुए तत्त्वों को एकत्रित कर, उन्हें सरल, व्यवस्थित एवं सुलभ रूप में प्रस्तुत करना है, जिससे विद्यार्थी को समग्र ज्ञान एक ही स्थान पर प्राप्त हो सके।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि **वर्ण केवल ध्वनि मात्र नहीं, अपितु त्रिविध स्वरूपयुक्त है**– अपितु उसका स्वरूप त्रिविध है–

- ध्वनि (श्रवणीय)
- लिपि (दृश्य रूप)
- अर्थ (बोधक शक्ति)

अतः वर्ण एक समग्र तत्त्व है, जो श्रवण, दर्शन और बोधन–तीनों का आधार है।

वर्ण-त्रिरूप विषयक स्पष्टीकरण

यहाँ एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है कि जब प्राचीन आचार्यों ने शिक्षा-वेदाङ्ग में वर्ण को मुख्यतः ध्वनि-रूप में ही स्वीकार किया है, तब इस ग्रन्थ में वर्ण को ध्वनि, लिपि एवं अर्थ–इन तीनों रूपों में क्यों माना गया है? क्या यह पूर्वाचार्यों के मत से भिन्न है?

इसका उत्तर यह है कि यहाँ किसी प्रकार से पूर्वाचार्यों के मत का खण्डन नहीं किया गया है, अपितु उनके सिद्धान्त का **विस्तार एवं समन्वय** किया गया है।

वस्तुतः शिक्षा-वेदाङ्ग का मुख्य विषय ध्वनि ही है, क्योंकि वेदों की रक्षा *श्रुति-परम्परा* द्वारा होती है। अतः प्राचीन आचार्यों ने ध्वनि को ही प्रधानता दी–यह पूर्णतः युक्तिसंगत है।

किन्तु व्यवहार में वर्ण का अस्तित्व केवल श्रवण तक सीमित नहीं रहता–वह लिपि के रूप में दृश्य होता है और अर्थ के रूप में बोध का कारण बनता है। अतः–

- ध्वनि मूल है
- लिपि उसका दृश्य रूप है
- अर्थ उसका बोध-फल है

इस प्रकार अर्थ को ध्वनि और लिपि से पृथक् न मानकर उसी का परिणाम माना गया है। अतः यह प्रस्तुति परम्परा का विरोध नहीं, बल्कि उसका **शिक्षणोपयोगी विस्तार** है।

यह ज्ञान अनादि शिव-परम्परा से प्रवाहित होकर अपिशल्यादि ऋषियों के माध्यम से पाणिनि तथा पतञ्जलि तक पहुँचा। आगे चलकर दयानन्द सरस्वती ने इसे पुनर्जीवित किया तथा युधिष्ठिर मीमांसक ने इसे व्यवस्थित रूप प्रदान किया।

मुझे इस विषय का अध्ययन जिन आचार्यों के सान्निध्य में प्राप्त हुआ, उनमें विशेषतः–

- स्वर्गीय विजयपाल विद्यावारिधि, रेवली
- प्रदीप शास्त्री, पाणिनि विद्यालय, रेवली
- उदयनाचार्य, निगम निडम् गुरुकुल, गज्वेल

आदि आचार्यों का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

इस ग्रन्थ की रचना में अनेक प्रातिशाख्य एवं शिक्षा-ग्रन्थों का सहारा लिया गया है, जैसे–

- तैत्तिरीय प्रातिशाख्य तथा अन्य प्रातिशाख्य-ग्रन्थ
- पाणिनीय शिक्षा एवं श्लोकात्मिका शिक्षा
- शिक्षा-सूत्राणि (युधिष्ठिर मीमांसक कृत)

- शिक्षा-ग्रन्थ-संग्रह

इन समस्त ग्रन्थों में शिक्षा-विषय का ज्ञान विभिन्न स्थानों पर बिखरा हुआ प्राप्त होता है। जिस प्रकार योगशास्त्र में समता-विद्या अनेक ग्रन्थों में विखण्डित रूप में उपलब्ध है, उसी प्रकार शिक्षा-वेदाङ्ग का विषय भी विविध ग्रन्थों में बिखरा हुआ है। अतः उन सभी तत्त्वों का संग्रह एवं समन्वय करना इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है।

ग्रन्थ की परम्परा एवं सन्दर्भ

यह ग्रन्थ पाणिनीय परम्परा के आधार पर निर्मित है। ध्वनि-प्रकरण का आधार पाणिनि, प्रातिशाख्य-परम्परा तथा युधिष्ठिर मीमांसक आदि विद्वानों के ग्रन्थ हैं। इसमें नवीनता का आधार समन्वयात्मक दृष्टि है, जबकि संरचना परम्परा-समर्थित है।

इस रचना में तैत्तिरीय प्रातिशाख्य सहित विभिन्न प्रातिशाख्य-ग्रन्थ, पाणिनीय शिक्षा, श्लोकात्मिका शिक्षा, शिक्षा-सूत्राणि तथा अन्य शिक्षा-ग्रन्थों का आधार लिया गया है। इन सभी ग्रन्थों में वर्ण-विषयक ज्ञान विभिन्न स्थानों पर बिखरा हुआ प्राप्त होता है। अतः उनका समन्वय एवं एकीकृत प्रस्तुति इस ग्रन्थ का उद्देश्य है।

नटराज – वर्णविज्ञान का प्रतीक

नटराज की मूर्ति इस सम्पूर्ण वर्णविज्ञान की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। डमरु ध्वनि का प्रतीक है, अग्नि लिपि का, अभयमुद्रा वर्णार्थ का, गजहस्त अध्ययन का, उत्थित पाद वैदिक पाठ का तथा अपस्मार पाद तान्त्रिक पाठ का संकेत करता है। प्रभामण्डल लिपि-विकास का प्रतीक माना गया है। यह व्याख्या प्रतीकात्मक एवं दार्शनिक दृष्टि से प्रस्तुत की गई है, न कि शास्त्रीय नियम के रूप में।

मूलग्रन्थ एवं उपग्रन्थ – विभाजन का आधार

यह ग्रन्थ दो भागों में विभक्त है – मूलग्रन्थ और उपग्रन्थ। ध्वनि एवं लिपि को मूलशास्त्र के रूप में रखा गया है, जबकि वर्णार्थ, अध्ययनादि, वैदिक पाठ, लिपि-विकास तथा तान्त्रिक पाठ को उपग्रन्थों में विभाजित किया गया है।

अध्ययनादि में पाठ-विधि, अभ्यास-प्रक्रिया एवं शिक्षण-संबंधी विषय सम्मिलित हैं।

यह विभाजन तीन कारणों से किया गया है –

* प्रथम, विषय-विस्तार की अधिकता;
* द्वितीय, पाणिनीय परम्परा के अनुरूप सुव्यवस्थित अध्ययन की सुविधा;

- तृतीय, सामान्य एवं विशिष्ट पाठकों के लिए पृथक् संरचना की आवश्यकता।

लिपि को मूलशास्त्र में स्थान

यद्यपि प्राचीन परम्परा में श्रुति को प्रधानता प्राप्त थी, तथापि यास्क के निरुक्त एवं पाणिनीय परम्परा में लिखित संकेतों के प्रमाण मिलते हैं। प्रतीत होता है कि उस काल में श्रुति-परम्परा को प्राथमिकता दी गई थी। वर्तमान काल में ज्ञान-संरक्षण के लिए लिपि अनिवार्य हो चुकी है। अतः लिपि को मूलशास्त्र में सम्मिलित करना परम्परा का विरोध नहीं, बल्कि उसका स्वाभाविक विस्तार है।

६ संस्करणों की योजना

यह ग्रन्थ छह संस्करणों में प्रकाशित किया जाएगा–

- **प्रथम संस्करण** – वर्णशिक्षा(मूलग्रन्थ)
- **द्वितीय संस्करण** – अध्ययनादि
- **तृतीय संस्करण** – वर्णार्थ
- **चतुर्थ संस्करण** – वैदिक पाठ
- **पञ्चम संस्करण** – लिपि-विकास
- **षष्ठ संस्करण** – तान्त्रिक पाठ

प्रत्येक संस्करण में विद्वानों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर आवश्यक संशोधन एवं परिष्कार किया जाएगा। वर्णशिक्षाग्रन्थ में २४१ सूत्र हैं। इसमें दो अध्याय हैं–पहले अध्याय में ८ पाद हैं और दूसरे अध्याय में २ पाद हैं।

तीन भाषाओं में प्रस्तुति

यह ग्रन्थ संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी – तीनों भाषाओं में प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत विद्वानों के लिए, हिन्दी सामान्य जिज्ञासुओं के लिए तथा अंग्रेजी अन्तरराष्ट्रीय पाठकों के लिए है। वर्ण-विज्ञान केवल भारत का विषय नहीं, बल्कि वैश्विक ज्ञान-क्षेत्र का विषय है।

ग्रन्थ की उपयोगिता एवं सीमा

यह ग्रन्थ विशेषतः विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं वेदाध्येताओं के लिए उपयोगी है। इसमें केवल शिक्षा-वेदाङ्ग के अन्तर्गत वर्ण के ध्वनि एवं लिपि-स्वरूप का ही विवेचन किया गया है। अन्य वेदाङ्गों का विस्तार इसमें सम्मिलित नहीं है। उपग्रन्थों के माध्यम से शेष विषयों का विस्तार प्रस्तुत किया जाएगा।

पाठक हेतु निर्देश

वर्णोच्चारण का अभ्यास सदैव योग्य आचार्य के निर्देशन में ही करना चाहिए, क्योंकि सूक्ष्म त्रुटियाँ स्वयं सहज रूप से ज्ञात नहीं होतीं।

कालाधीनता एवं दर्शन

इस ग्रन्थ की उपयोगिता काल के अधीन है। यदि यह समाजोपयोगी सिद्ध होता है तो यह परम्परा का अंग बनेगा, अन्यथा उसका परिवर्तन स्वाभाविक होगा। यही सृष्टि-स्थिति-संहार का शाश्वत दर्शन है।

ज्ञान-यज्ञ में समर्पण

यह ग्रन्थ व्यक्तिगत नहीं, बल्कि एक ज्ञान-यज्ञ है। जैसे यज्ञ में प्रत्येक आहुति का महत्व होता है, वैसे ही इस ग्रन्थ में प्रत्येक विद्वान का योगदान इसे पूर्णता प्रदान करता है।

जो कुछ श्रेष्ठ है वह पूर्वाचार्यों का है, और जो भी त्रुटि है वह मेरी है। विद्वज्जन कृपया मार्गदर्शन प्रदान करें।

— निरञ्जन प्रधान

(शिक्षा-वेदाङ्ग-अध्येता, ब्रह्मपुर (ओडिशा))

Invocation (Maṅgalācaraṇa)

The ḍamaru of Naṭarāja is ever proclaimed as sound; the fire is said to be script; the gesture of fearlessness represents the meaning of letters.
The gaja-hasta is known as the promoter of study; the raised foot signifies the Vedic tradition, and the foot placed upon Apasmāra represents the Tantric aspect.
The halo (prabhāmaṇḍala) is declared to be the mark of the development of script.

(*Naṭarāja is a symbolic representation of phonetic science****.)***

Preface to the Śikṣā Vedāṅga Text

The Vedas are the most ancient and divine repository of knowledge in Indian culture. They are not merely religious texts, but the fundamental sources of the comprehensive science of life. The preservation of the Vedas has been carried out through the oral tradition (śruti-paramparā), that is, through listening and recitation from teacher to student. Therefore, correct pronunciation holds utmost importance in the Vedas. Even a slight error in pronunciation can alter the meaning of a mantra and diminish its intended effect.

To preserve this precision, the ancient seers composed the auxiliary disciplines of the Vedas—the Vedāṅgas—among which the Śikṣā Vedāṅga holds a prominent place. Śikṣā primarily deals with the science of proper pronunciation of phonemes, including their origin, place of articulation, effort, accent, duration, strength, harmony, and continuity.

The purpose of this text is to collect the scattered principles found in various Śikṣā texts and present them in a simple, systematic, and accessible manner, so that a student may obtain comprehensive knowledge in one place.

The Threefold Nature of Letters (Varṇa)

It is important to understand that a letter (varṇa) is not merely sound, but possesses a threefold nature:

- Sound (auditory)
- Script (visual form)
- Meaning (cognitive function)

Thus, a letter is a complete entity, forming the basis of hearing, seeing, and understanding.

Clarification on the Threefold Nature

A natural question arises: if ancient teachers of the Śikṣā Vedāṅga accepted letters primarily as sound, why are they presented here as sound, script, and meaning?

The answer is that this does not contradict earlier authorities, but rather extends and harmonizes their principles.

In truth, the primary subject of Śikṣā is sound, since the Vedas are preserved through oral tradition. Therefore, the emphasis on sound by ancient teachers is fully justified.

However, in practical usage, a letter does not remain limited to sound alone—it appears in written form and functions as a carrier of meaning. Therefore:

- Sound is the foundation
- Script is its visible form
- Meaning is its cognitive result

Thus, meaning is not separate from sound and script, but arises from them. This presentation is not a contradiction of tradition, but an educational expansion of it.

Lineage of Knowledge

This knowledge has flowed from the beginningless Śiva tradition through sages such as Apiśali, reaching Pāṇini and Patañjali. In later times, Dayananda Saraswati revived this knowledge, and Yudhishthira Mimamsaka systematized it.

I have studied this subject under the guidance of esteemed teachers, especially:

- Late Vijaypal Vidyavaridhi (Revali)
- Pradeep Shastri (Panini Vidyalaya, Revali)
- Udayanacharya (Nigama Nidam Gurukula, Gajwel)

To all of them, I express my gratitude.

Sources of the Text

This work draws upon various Prātiśākhya and Śikṣā texts, such as:

- Taittirīya Prātiśākhya and other Prātiśākhya texts
- Pāṇinīya Śikṣā and Ślokātmikā Śikṣā
- Śikṣā Sūtras (by Yudhishthira Mimamsaka)
- Compilations of Śikṣā texts

The knowledge of phonetics is scattered across these texts, and the aim of this work is to collect and harmonize them.

Naṭarāja as a Symbol of Phonetic Science

The image of Naṭarāja symbolically represents the entire science of phonetics. The ḍamaru signifies sound, fire represents script, the gesture of fearlessness represents meaning, the gaja-hasta represents study, the raised foot indicates the Vedic tradition, and the foot on Apasmāra represents the Tantric aspect. The halo symbolizes the evolution of script.

This interpretation is presented from a philosophical and symbolic perspective, not as a strict doctrinal rule.

Division of Main Text and Auxiliary Texts

This work is divided into two parts: the main text and auxiliary texts. Sound and script are treated as the primary disciplines, while meaning, study-method, Vedic recitation, script development, and Tantric application are presented as auxiliary texts.

The study section includes recitation methods, practice techniques, and pedagogical principles.

This division is based on three reasons:

- The vastness of the subject
- The need for systematic study in accordance with the Pāṇinian tradition
- The necessity of separate structures for general and advanced readers

Position of Script in the Main Text

Although the ancient tradition prioritized oral transmission, evidence of written forms is found in works such as Yāska's Nirukta and the Pāṇinian tradition. In modern times, script has become essential for the preservation of knowledge. Therefore, including script in the main text is not a deviation from tradition, but its natural extension.

Plan of Six Editions

This work will be published in six editions:

- First Edition — Varṇaśikṣā (Main Text)
- Second Edition — Study Methods
- Third Edition — Meaning
- Fourth Edition — Vedic Recitation
- Fifth Edition — Script Development
- Sixth Edition — Tantric Application

Each edition will be revised based on scholarly feedback.The *Varṇaśikṣā* text contains 241 sūtras. It is divided into two chapters—the first chapter has 8 pādas, and the second chapter has 2 pādas.

Presentation in Three Languages

This work is presented in Sanskrit, Hindi, and English—for scholars, general learners, and international readers respectively. The science of phonetics is not limited to India, but belongs to the global domain of knowledge.

Usefulness and Scope

This text is especially useful for students, researchers, and Vedic learners. It primarily discusses the phonetic and scriptural aspects of letters within the scope of Śikṣā Vedāṅga. Other aspects will be elaborated in auxiliary texts.

Instruction to Readers

The practice of pronunciation should always be undertaken under the guidance of a qualified teacher, as subtle errors are not easily detected independently.

Time and Philosophy

The relevance of this work depends on time. If it proves beneficial to society, it will become part of tradition; otherwise, change is natural. This reflects the eternal cycle of creation, preservation, and dissolution.

Dedication to the Knowledge-Sacrifice

This work is not personal, but a contribution to the sacrifice of knowledge. Just as every offering is significant in a ritual, so too every scholar’s contribution completes this work.

Whatever is excellent belongs to the predecessors; any errors are mine. I humbly request scholars to offer their guidance.

— Niranjan Pradhan
(Student of Śikṣā Vedāṅga, Brahmapur, Odisha)

वर्णशिक्षा

आरम्भिक सूत्र

सूत्र १ – अथ वर्ण-शिक्षा ।

हिंदी : अब वर्ण-शिक्षा (अक्षरों/ध्वनियों का अध्ययन) आरम्भ होता है।

सरल अर्थ: यहाँ से अक्षरों और उनके सही उच्चारण की शिक्षा शुरू होती है।

English : Now begins the study of letters (phonetics).

Simple meaning: This marks the beginning of learning about sounds and their correct pronunciation.

सूत्र २ – वर्णस्वरमात्राबलसामसन्तानाः शिक्षा।

हिन्दी: वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम और सन्तान – यही शिक्षा है।

English : Varna, Svara, Matra, Bala, Sama and Santana — this is Shiksha.

सूत्र ३ – ध्वनिः शिक्षायाः मूलम्, लिपिस्तस्य विस्तारः।

हिन्दी: ध्वनि शिक्षा का मूल है – लिपि उसका विस्तार है।

English : Dhvani is the root of Shiksha — Lipi (script) is its extension.

सूत्र ४ – वर्णस्य त्रीणि रूपाणि – ध्वनिरूपम्, लिपिरूपम्, अर्थरूपं च। अर्थः तु ध्वनौ लिपौ च अन्तर्गतः। अतः व्यवहारे वर्णौ द्वौ एव – ध्वनिश्च लिपिश्च।।

हिंदी : वर्ण के तीन रूप होते हैं – ध्वनि-रूप, लिपि-रूप और अर्थ-रूप। लेकिन अर्थ तो ध्वनि और लिपि दोनों में ही समाहित रहता है। इसलिए व्यवहार में वर्ण के केवल दो ही रूप माने जाते हैं – ध्वनि और लिपि।

सरल अर्थ: अक्षर का एक रूप बोलने में (ध्वनि), एक लिखने में (लिपि), और एक उसके अर्थ से जुड़ा होता है। पर अर्थ अलग से नहीं, बल्कि ध्वनि और लिपि में ही होता है। इसलिए हम मुख्यतः दो ही रूप मानते हैं।

English : A letter (varṇa) has three forms — the sound form, the written (script) form, and the meaning form. However, meaning is inherently included within both sound and script. Therefore, in practical usage, there are only two forms of a letter — sound and script.

Simple meaning: A letter exists as something we pronounce (sound), something we write (script), and something that carries meaning. But since meaning is contained within sound and writing, we mainly consider only two forms: sound and script.

सूत्र ५ – वर्णविज्ञाने वर्णशिक्षा मूलशास्त्रम्, वर्णार्थवैदिकतान्त्रिकाध्ययनलिपिविकासाः पञ्चोपशास्त्राणि।

हिंदी : वर्ण-विज्ञान में वर्ण-शिक्षा ही मूल शास्त्र है, और वर्ण, अर्थ, वैदिक तथा तांत्रिक अध्ययन तथा लिपि-विकास आदि पाँच उपशास्त्र हैं।

English : In the science of phonetics (Varṇa-vijñāna), Varṇa-Śikṣā is the fundamental discipline, and the study of letters, meaning, Vedic and Tantric traditions, along with script development, constitute the five subsidiary sciences.

संक्षिप्त व्याख्या

इस सूत्र में सम्पूर्ण ग्रन्थ की रचना-व्यवस्था का संक्षेप में निरूपण किया गया है। **वर्णशिक्षा (**ध्वनि और लिपि) को मूलशास्त्र कहा गया है, क्योंकि वर्ण का मूल स्वरूप इन्हीं दोनों पर आधारित है।

अन्य विषय–

- वर्णार्थ (अर्थ)
- वैदिक (वेदपाठ)
- तान्त्रिक (तन्त्रप्रयोग)
- अध्ययन (अध्ययन-विधि)
- लिपिविकास (लिपि का विकास)

इन सबको उपशास्त्र कहा गया है, क्योंकि ये मुख्य विषय के विस्तार एवं प्रयोगात्मक पक्ष को स्पष्ट करते हैं।

सूत्र ६ – आत्मा बुद्ध्या मनो युङ्क्ते, कायाग्निः वायुं प्रचोदयेत्। मारुतः आकाशमासाद्य, नादरूपं प्रपद्यते।। नादः स्थानेषु विभज्यते, वर्णभावं च गच्छति। स एव शब्दरूपेण, ब्रह्मवाणी प्रकाशते।।

हिंदी : आत्मा, बुद्धि के द्वारा मन को जोड़ता है; फिर शरीर की अग्नि (ऊर्जा) वायु को प्रेरित करती है। वह वायु (प्राण) आकाश में पहुँचकर नाद (ध्वनि) का रूप धारण कर लेती है।

यह नाद विभिन्न उच्चारण-स्थानों में विभाजित होकर वर्ण (अक्षर) बन जाता है। वही आगे शब्द के रूप में प्रकट होकर ब्रह्म-वाणी के रूप में प्रकाशित होता है।

सरल अर्थ: आत्मा से शुरू होकर मन, प्राण, ध्वनि और अक्षरों के माध्यम से अंततः वाणी प्रकट होती है – यह पूरी प्रक्रिया बताई गई है।

English : The self (ātman), through the intellect, engages the mind; then the bodily fire (energy) sets the air in motion. That air (breath), reaching the space (ākāśa), transforms into sound (nāda).

This sound gets divided at different points of articulation and becomes letters (varṇas). That same, manifesting as words, shines forth as the divine speech (Brahma-vāṇī).

Simple meaning: Speech originates from the self, moves through mind and breath, becomes sound, then letters, and finally emerges as meaningful words.

सूत्र ७ – श्रोत्रोपलब्धो बुद्धिनिर्ग्राह्यः प्रयोगेणाभिव्यक्तः। आकाशदेशे विहरन् नित्यं स एव शब्दः परिकीर्त्यते।।

हिंदी: जो श्रोत्र (कान) द्वारा ग्रहण किया जाता है, बुद्धि से समझा जाता है, और प्रयोग (उच्चारण / उपयोग) से प्रकाशित होता है – वह आकाश में सदैव विचरता हुआ वही शब्द कहलाता है।

सरल अर्थ: जो ध्वनि हम सुनते हैं, समझते हैं और बोलते हैं–वही आकाश में फैलकर "शब्द" कहलाती है।

English : That which is perceived by the ear, grasped by the intellect, and manifested through usage (articulation), moving in the realm of space, is known as sound (śabda).

Simple meaning: Sound is what we hear, understand, and express—it exists and travels through space.

सूत्र ८ – तमक्षरं ब्रह्म परं पवित्रं गुहाशयं सम्यगुशन्ति विप्राः। स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव सम्यक् प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति।।

हिंदी – वह अक्षर (अविनाशी तत्व) ही परम ब्रह्म और अत्यन्त पवित्र है, जो हृदय-गुहा में स्थित है – ऐसा विद्वान (विप्र) लोग भली-भाँति कहते हैं। वह (अक्षर), जब ठीक प्रकार से प्रयोग किया जाता है, तो मनुष्य को श्रेय (मोक्ष) और अभ्युदय (उन्नति/संसारिक सफलता) — दोनों से जोड़ देता है।

सरल अर्थ: अक्षर (शब्द/ध्वनि) ही परम सत्य है, जो भीतर स्थित है। उसका सही उपयोग मनुष्य को आध्यात्मिक उन्नति और सांसारिक सफलता दोनों देता है।

English — That imperishable syllable (akṣara) is the supreme Brahman, most pure, residing in the inner cave (of the heart) — thus the wise declare. When properly applied, it connects a person with both spiritual good (śreyas) and worldly prosperity (abhyudaya).

Simple meaning: The eternal sound (akṣara) is the highest truth within us. When used correctly, it leads to both spiritual growth and material success.

अथ ध्वनि-शाखा-मिदम्

सूत्र ९ – अथ ध्वनि-शाखायाम् अष्टौ पाठाः – स्थान-प्रकरणम्, करण-प्रकरणम्, आभ्यन्तर-प्रयत्न-प्रकरणम्, बाह्य-प्रयत्न-प्रकरणम्, स्थान-पीडि-प्रकरणम्, वृत्तिकर-प्रकरणम्, क्रम-प्रकरणम्, नाभि-तल-प्रकरणम्।"

अथ ध्वनि-शाखायाम् अष्टौ पाठाः –

= अब ध्वनि-शाखा (ध्वनिविज्ञान) में आठ पाठ (अध्याय) हैं –

1. स्थान-प्रकरणम् – उच्चारण के स्थान का वर्णन
2. करण-प्रकरणम् – उच्चारण के साधनों (अंगों) का वर्णन

3. आभ्यन्तर-प्रयत्न-प्रकरणम् – आन्तरिक प्रयास (मुँह के भीतर होने वाले प्रयास) का वर्णन
4. बाह्य-प्रयत्न-प्रकरणम् – बाह्य प्रयास (बाहर से होने वाले प्रयास) का वर्णन
5. स्थान-पीडि-प्रकरणम् – उच्चारण-स्थान के दबाव (संयोग/स्पर्श) का वर्णन
6. वृत्तिकर-प्रकरणम् – उच्चारण की गति/वृत्ति का वर्णन
7. क्रम-प्रकरणम् – ध्वनियों के क्रम (अनुक्रम) का वर्णन
8. नाभि-तल-प्रकरणम् – नाभि से लेकर मुख तक की ध्वनि-उत्पत्ति का वर्णन

अथ ध्वनि-शाखायाम् अष्टौ पाठाः –

= Now, in the branch of phonetics (science of sound), there are eight sections (chapters):

1. **स्थान-प्रकरणम् –** Description of the places of articulation.
2. **करण-प्रकरणम् –** Description of the instruments/organs of articulation.
3. **आभ्यन्तर-प्रयत्न-प्रकरणम् –** Description of internal effort (articulatory actions within the mouth).
4. **बाह्य-प्रयत्न-प्रकरणम् –** Description of external effort (articulatory features produced externally).
5. **स्थान-पीडि-प्रकरणम् –** Description of the pressure/contact at the place of articulation.
6. **वृत्तिकर-प्रकरणम् –** Description of the manner or movement (flow) of articulation.
7. **क्रम-प्रकरणम् –** Description of the sequence/order of sounds.
8. **नाभि-तल-प्रकरणम् –** Description of sound production from the navel region up to the mouth.

सूत्र १० – स्थानकरणप्रयत्नपरेभ्यो वर्णाः त्रिषष्टिः।

हिंदी : स्थान, करण और प्रयत्न आदि के आधार पर वर्णों की संख्या **तिरसठ (63)** है।

English : Based on place (sthāna), organ (karaṇa), and manner of articulation (prayatna), the number of phonetic units (varṇas) is sixty-three (63).

सूत्र ११ – वर्णसंख्याविषये तु मतभेदो महान् स्थितः । अष्टषष्टिं वदन्त्येके अष्टपञ्चाशतं परे ॥
पञ्चाशन्मतमन्येषां संख्याविवाद एव हि । पाणिनिस्तु त्रिषष्टिं वै सनासिक्यं चतुःषष्टिकम् ॥

हिन्दी : वर्णों की संख्या के विषय में आचार्यों में बड़ा मतभेद है – कुछ 68, कुछ 58, कुछ 50 वर्ण मानते हैं। किन्तु पाणिनि का मत 63 है – नासिक्य सहित 64।

English: There is considerable (difference of opinion) among the teachers regarding the number of letters (varṇas) — some accept 68, some 58, and others 50. However, the view of Pāṇini is 63 — and including the nasal (nāsikya), it becomes 64.

अथ लिपि-शाखा-मिदम्

सूत्र १२ – अथ लिपिशाखायां द्वौ पाठौ – वर्णलिपिप्रकरणं प्रथमम्, अङ्कलिपिप्रकरणं द्वितीयम्॥

हिंदी : अब लिपि-शाखा में दो पाठ हैं – पहला वर्ण-लिपि-प्रकरण और दूसरा अंक-लिपि-प्रकरण।

English : Now, in the branch of script, there are two sections — the first is the section on letter-script, and the second is the section on numeral-script.

प्रथमोऽध्यायः

प्रथमः पादः (**स्थान-प्रकरणम्**)

सूत्र १ – तत्र स्थानं तावत्।

हिंदी: वहाँ पहले स्थान है।

English: Here is the first place (referring to articulation point of sounds).

सूत्र २ – अकुहिवसर्जनीयाः कण्ठ्याः।

हिंदी: अ-वर्ण, क-वर्ग (क ख ग घ ङ), ह, और विसर्ग – कण्ठ से उत्पन्न।

सरल अर्थ: ये स्वर और व्यंजन गले (कण्ठ) से उत्पन्न होते हैं।

English: The vowels and consonants 'a, k-class, h, visarga' are produced from the throat.

सूत्र ३ – हिवसर्जनीयावुरस्यावेकेषाम्।

हिंदी: ह और विसर्ग – कुछ के अनुसार उरस्य (छाती) से उत्पन्न।

English: 'h' and visarga are, according to some, produced from the chest.

सूत्र ४ – जिह्वामूलीयो जिह्वाघः।

हिंदी : जिह्वामूलीय – जिह्वामूल (जीभ की जड़) से।

सरल अर्थ: यह श्रेणी जीभ की जड़ से निकलती है।

English: 'Jihvamuliya' sounds originate from the root of the tongue.

सूत्र ५ – कवर्गिवर्णानुस्वारजिह्वामूलीया जिह्वा एकेषाम्।

हिंदी: क-वर्ग, अनुस्वार और जिह्वामूलीय – कुछ के मत में जीभ से।

English: According to some, 'k-class, anusvara, jihvamuliya' sounds are produced from the tongue.

सूत्र ६ – सर्वमुखस्थानमवर्णमित्येके।

हिंदी: अ-वर्ण – कुछ के अनुसार सम्पूर्ण मुख से।

English: The vowel 'a' is articulated from the whole mouth.

सूत्र ७ – कण्ठनासिकास्थामात्रानित्येके।

हिंदी: कण्ठ और नासिका दोनों से उत्पन्न।

English: Some sounds are produced from both throat and nose.

सूत्र ८ – इचुयशास्तालव्याः।

हिंदी: इ-वर्ण, च-वर्ग (च छ ज झ ञ), य और श – तालु (मुँह की छत) से।

English: These sounds are articulated from the palate.

सूत्र ९ – ऋटुरषा मूर्धन्याः।

हिंदी: ऋ-वर्ण, ट-वर्ग (ट ठ ड ढ ण), र और ष – मूर्धा (सर्वोच्च भाग मस्तिष्क के पास) से।

English: Articulated from the upper part of the mouth/skull region.

सूत्र १० – रेफो दन्तमूलीय एकेषाम्।

हिंदी: र – कुछ के अनुसार दन्तमूल से।

English: 'r' comes from the root of teeth according to some.

सूत्र ११ – दन्तमूलस्तु तवर्गः।

हिंदी: त-वर्ग (त थ द ध न) — दन्तमूल से।

English: Dental sounds are produced from the base of teeth.

सूत्र १२ – लृतुलसा दन्त्याः।

हिंदी: लृ-वर्ण, त-वर्ग (त थ द ध न), ल और स – दन्त से।

English: Certain consonants originate from teeth.

सूत्र १३ – वकारो दन्तोष्ठयः।

हिंदी: व – दन्त और ओष्ठ दोनों से।

English: 'v' is articulated from teeth and lips.

सूत्र १४ – सृक्किणीस्थानमेकेषाम्।

हिंदी: कुछ के अनुसार – सृक्किणी स्थान से।

English: Certain sounds come from the srikini (soft palate area).

सूत्र १५ – उपूपध्मानीया ओष्ठ्याः।

हिंदी: उ-वर्ण, प-वर्ग (प फ ब भ म), उपध्मानीय – ओष्ठ से।

English: Labial sounds are produced from lips.

सूत्र १६ – अनुस्वारयमा नासिक्याः।

हिंदी: अनुस्वार और यम – नाक से।

English: Nasal sounds are produced from the nose.

सूत्र १७ – कण्ठनासिकयमनुस्वारमेकेन।

हिंदी: कुछ के अनुसार – यम और अनुस्वार कण्ठ और नासिका दोनों से।

English: Some nasal and semi-vowels come from both throat and nose.

सूत्र १८ – यमाश्च नासिकयजिह्वामूलीया एकेषाम्।

हिंदी: यम और जिह्वामूलीय – नाक और जीभ की जड़ से।

English: Certain semi-vowels and jihvamuliya sounds are from nose and root of tongue.

सूत्र १९ – ए ऐ कण्ठोष्ठचौ।

हिंदी: ए और ऐ – कण्ठ और तालु दोनों से।

English: These vowels are articulated using throat and palate.

सूत्र २० – ओ औ कण्ठोष्ठयौ।

हिंदी: ओ और औ – कण्ठ और ओष्ठ दोनों से।

English: These vowels use throat and lips.

सूत्र २१ – ङञणनमाः स्वस्थाना नासिकास्थानाः।

हिंदी: ङ, ञ, ण, न, म – अपने स्वस्थान और नासिका दोनों से।

English: Nasal consonants are articulated from their own place **and nose.**

सूत्र २२ – द्विवर्णिनि सन्ध्यक्षराणि।

हिंदी: संध्याक्षर – दो स्थानों से उत्पन्न।

English: Semi-vowels are produced from two articulation points.

सूत्र २३ – सरेफ ऋवर्णः।

हिंदी: ऋ-वर्ण – र के साथ।

English: ‘ṛ’ sound is articulated with ‘r’.

सूत्र २४ – इति संयुक्ता वर्णाः।

हिंदी: ये संयुक्त वर्ण हैं।

English: These are compound or conjunct letters.

सूत्र २५ – एवमेतानि स्थानानि।

हिंदी: इस प्रकार – स्थान-प्रकरण पूर्ण।

English: Thus, the study of articulation points is complete.

।। इति प्रथमः पादः ।।

पादः २ – करणप्रकरणम्

सूत्र १ – करणमपि।

हिंदी: करण भी है।

English: There is also a “Karaṇa” (articulator / organ of speech).

सूत्र २ – जिह्वाचतालव्यमूर्धन्यदन्त्यानां जिह्वा करणम्।

हिंदी: तालव्य (तालु से उत्पन्न), मूर्धन्य (मूर्धा से उत्पन्न), दन्त्य (दन्त से उत्पन्न) वर्णों का करण – जिह्वा (जीभ) है।

सरल अर्थ: तालु, ऊपरी मुँह और दन्त्य वर्णों को जीभ द्वारा उत्पन्न किया जाता है।

English: The articulator of palatal, cerebral, and dental consonants is the tongue.

सूत्र ३ – जिह्वामूलेन जिह्वाघानाम्।

हिंदी: जिह्वाघ वर्णों का करण – जिह्वामूल।

सरल अर्थ: जिह्वाघ (जिह्वा के पीछे की आवाज़) वर्णों का कारक अंग जीभ की जड़ है।

English: The articulator of jihvagh sounds is the root of the tongue.

सूत्र ४ – जिह्वामध्येन तालव्यानाम्।

हिंदी: तालव्य वर्णों का करण – जिह्वामध्य (tongue middle)।

सरल अर्थ: तालु से उत्पन्न वर्णों को जीभ के मध्य भाग से बनाया जाता है।

English: The middle part of the tongue articulates the palatal consonants.

सूत्र ५ – जिह्वोपाग्रेण मूर्धन्यानाम्।

हिंदी: मूर्धन्य वर्णों का करण – जिह्वोपाग्र (tongue tip / front)।

सरल अर्थ: मूर्धन्य (retroflex) वर्णों को जीभ के अग्र भाग से उत्पन्न किया जाता है।

English: Retroflex consonants are articulated by the tip of the tongue.

सूत्र ६ – जिह्वाग्राधः करणं वा।

हिंदी: जिह्वाग्राध (जिह्वा के अग्र + अध भाग) भी करण है।

सरल अर्थ: जीभ का नीचे का अग्र भाग भी articulator है।

English: The lower part of the tongue tip is also considered an articulator.

सूत्र ७ – जिह्वाग्रेण दन्त्यानाम्।

हिंदी: दन्त्य वर्णों का करण – जिह्वाग्र।

सरल अर्थ: दन्त्य (दाँत से उत्पन्न) वर्ण जीभ के अग्र भाग से बनते हैं।

English: Dental consonants are articulated with the tongue tip.

सूत्र ८ – शेषाः स्वस्थानकरणाः।

हिंदी: शेष वर्णों का करण – अपना स्वस्थान।

सरल अर्थ: बाकी वर्ण अपने स्वतः अंग से उत्पन्न होते हैं।

English: The remaining consonants have their own natural articulators.

सूत्र ९ – इत्येतत् करणम्।

हिंदी: इस प्रकार करण-प्रकरण पूर्ण।

English: Thus, the study of articulators (Karaṇa) is complete.

।। इति द्वितीयः पादः ।।

पादः ३ – आभ्यन्तरप्रयत्नप्रकरणम्

सूत्र १ – प्रयत्नो द्विविधः।

हिंदी: प्रयत्न दो प्रकार का होता है।

English: Effort (Prayatna) is of two types.

सूत्र २ – आभ्यन्तरो बाह्यश्च।

हिंदी: एक आभ्यन्तर और एक बाह्य ।

English: One is internal (abhyantara) and the other is external (bahya).

सूत्र ३ – स्वस्थाने आभ्यन्तरस्तावत्।

हिंदी: पहले आभ्यन्तर प्रयत्न।

English: Internal effort is considered first.

सूत्र ४ – स्पृष्टकरणाः स्पर्शाः।

हिंदी: स्पृष्ट वर्ण – स्पर्श द्वारा उत्पन्न।

English: Contact consonants are produced by touch/pressure.

सूत्र ५ – ईषत्स्पृष्टकर्णा अन्तस्थाः।

हिंदी: ईषत्स्पृष्ट वर्ण – अंतस्थ ।

English: Slightly contacted sounds are medial in effort.

सूत्र ६ – ईषद्विवृतकरणाः ऊष्माणः।

हिंदी: ईषद्विवृत वर्ण – ऊष्मा (stronger internal effort)।

English: Slightly opened sounds require more internal energy.

सूत्र ७ – विवृतकरणा वा।

हिंदी: विवृत वर्ण भी हैं।

English: There are also open (vivrita) sounds.

सूत्र ८ – विवृतकरणाः स्वराः।

हिंदी: विवृत वर्ण मुख्यतः स्वर हैं।

English: Open sounds are primarily vowels.

सूत्र ९ – तेम्य ए ओ विवृततरौ।

हिंदी: इन स्वरों में ए और ओ सबसे अधिक खुलकर उच्चारित होते हैं।

English: Among these vowels, ‘e’ and ‘o’ are more open.

सूत्र १० – ताम्यामं औ।

हिंदी: इनके बाद औ और अधिक खुला है।

English: After them, ‘au’ is even more open.

सूत्र ११ – ताम्यामप्याकारः।

हिंदी: इसके बाद भी आकार सबसे अधिक खुला है।

English: After that, ‘ā’ is the most open of all.

सूत्र १२ – संवृतस्त्वकारः।

हिंदी: अकार (अ) संवृत (closed / restrained) है।

English: The vowel ‘a’ is closed (samvrta).

सूत्र १३ – इत्येषोऽन्तःप्रयत्नः।

हिंदी: इस प्रकार अन्तः प्रयत्न पूरा होता है।

English: English: Thus, the study of internal effort is complete.

।। इति तृतीयः पादः ।।

पादः ४ – बाह्यप्रयत्नप्रकरणम्

सूत्र १ – अथ बाह्यः।

हिंदी: अब बाह्य प्रयत्न।

English: Now, the external effort (Bahya Prayatna).

सूत्र २ – वर्गाणां प्रथमद्वितीयाः शषसविसर्जनीयजिह्वामूलीयोपध्मानीया यमो च प्रथमद्वितीयौ विवृतकण्ठाः श्वासानुप्रदाना अघोषाः।

हिंदी: वर्गों के प्रथम-द्वितीय वर्ण, श ष स, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय और यम के प्रथम-द्वितीय वर्ण – ये सभी विवृतकण्ठ (open-throat), श्वासानुप्रदान (unaspirated), अघोष (voiceless) हैं।

English: The first and second sounds of the consonant groups, ṣ, ś, s, visarga, jihvamuliya, upadhmaniya, and the first and second of yama — are all open-throat, unaspirated, and voiceless.

सूत्र ३ – वर्गयमाना प्रथमा अल्पप्राणा इतरे सर्वे महाप्राणाः।

हिंदी: वर्ग और यम के प्रथम वर्ण – अल्पप्राण । शेष सभी वर्ण – महाप्राण ।

English: The first sounds of the consonant groups and yama are short-breathed (alpaprana); all others are long-breathed (mahaprana).

सूत्र ४ – वर्गाणां तृतीयचतुर्थि अन्तस्था हकारानुस्वारो यमो च तृतीयचतुर्थौ नासिक्याश्च संवृतकण्ठा नादानुप्रदाना घोषवन्तश्च।

हिंदी: वर्गों के तीसरे और चौथे वर्ण, अन्तस्थ, हकार, अनुस्वार, यम के तीसरे और चौथे, और नासिक्य वर्ण – ये संवृतकण्ठ (closed-throat), नादानुप्रदान (with sound), घोष (voiced) हैं।

English: The third and fourth consonants of each group, the retroflex, h, anusvara, the third and fourth of yama, and nasal sounds — are closed-throat, voiced, and articulated with sound.

सूत्र ५ – वर्गयमाना तृतीया अन्तस्थाश्चल्पप्राणा इतरे सर्वे महाप्राणाः।

हिंदी: वर्ग और यम के तीसरे वर्ण तथा अन्तस्थ – अल्पप्राण। शेष सभी – महाप्राण।

English: The third consonants of the groups and retroflex sounds are short-breathed, others are long-breathed.

सूत्र ६ – यथातृतीयास्तथा पञ्चमाः।

हिंदी: तीसरे वर्ण की तरह ही पंचम वर्ण।

English: The fifth consonants follow the same characteristics as the third.

सूत्र ७ – अनुनासिकयमेषामधिको गुणः।

हिंदी: अनुनासिक और यम वर्णों में अधिक नासिक्य गुण है।

English: Nasal and semi-vowel (yama) sounds have greater nasal quality.

सूत्र ८ – कादयो मावसाना स्पर्शाः।

हिंदी: क से म तक – ये स्पर्श (contact / stop) वर्ण हैं।

English: From ‘ka’ to ‘ma’ — these are stop consonants.

सूत्र ९ – यादयोऽन्तस्थाः।

हिंदी: य आदि – अन्तस्थ (medial) हैं।

English: ‘ya’ and similar sounds are medial.

सूत्र १० – शादय ऊष्माणः।

हिंदी: श आदि – ऊष्मा (stronger internal effort / tense) हैं।

English: ‘śa’ and similar sounds are tense (strongly articulated).

सूत्र ११ – सस्थानेन द्वितीयाः।

हिंदी: स्थाने (सस्थान) वर्ण से – द्वितीय वर्ण।

English: The second consonant is determined from the base position.

सूत्र १२ – हकारेण चतुर्थाः।

हिंदी: हकार से – चौथे वर्ण।

English: The fourth consonant is determined by the ‘ha’ sound.

सूत्र १३ – इत्येष बाह्यः प्रयत्नः।

हिंदी: इस प्रकार बाह्य प्रयत्न पूर्ण।

English: Thus, the study of external effort is complete.

।। इति चतुर्थः पादः ।।

पादः ५ — स्थानपीडनप्रकरणम्

सूत्र १ — तत्र स्पर्शव्यमवर्णकारो वायुरयःपिण्डवत् स्थानमभिपीडयति।

हिंदी: स्पर्श और यम वर्णकार वायु अपने स्थान पर लोहे के पिण्ड की तरह दबाव डालते हैं।

English: Contact consonants and yama sounds press their place of articulation like a metal weight.

सूत्र २ — अन्तस्यवर्णकारो वायुर्दिपिण्डवत्।

हिंदी: अन्तस्थ वर्णकार वायु अपने स्थान पर दीपक की लौ की तरह दबाव डालते हैं।

English: Medial consonants exert pressure on their articulation point like a lamp flame.

सूत्र ३ — ऊष्मस्वरवर्णकारो वायुरूर्णापिण्डवत्।

हिंदी: ऊष्मा स्वरवर्णकार वायु अपने स्थान पर ऊर्णा (तृप्त, ऊँचा) पिण्ड की तरह दबाव डालते हैं।

English: Tense vowels exert pressure like a heavy or high mass on their articulation point.

।। इति पञ्चमः पादः ।।

पादः ६ – वृत्तिकार-प्रकरणम्

सूत्र १ – एवं व्याख्याने वृत्तिकाराः पठन्ति – अष्टादशप्रभेदमवर्णकुलिमिति तत्कथमुक्तम्।।

हिंदी: व्याख्यान में वृत्तिकार पढ़ते हैं – "अकार-कुल के अठारह भेद"।

English: In commentaries, Vrittikāras recite that the ‘ā-kara’ group has eighteen varieties.

स्पष्टीकरण: अकार का १८ प्रकार होने का आधार आगे स्पष्ट किया गया है।

सूत्र २ – ह्रस्वदीर्घप्लुतत्वाच्च त्रैस्वर्योपनयेन च। ज्ञानुनासिक्यभेदाच्च संख्यातोऽष्टादशात्मकः।।

हिंदी:

- ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत – तीन मात्रा-भेद।
- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित – तीन स्वर भेद।
- अनुनासिक / निरनुनासिक भेद।
- इस प्रकार अकार की संख्या १८ होती है।

English:

- Eighteen varieties of ‘ā’ arise from short, long, pluta durations; udātta, anudātta, svarita intonations; and nasal or non-nasal distinctions.

सूत्र ३ – एवमिवर्णादयः।

हिंदी: इसी प्रकार इकार आदि वर्ण भी अठारह-भेद वाले होते हैं।

English: Similarly, vowels like ‘i’ also have eighteen varieties.

सूत्र ४ – लुवर्णस्य दीर्घा न सन्ति।

हिंदी: ऌ-वर्ण के दीर्घ रूप नहीं होते।

English: The vowel ‘ḷ’ does not have a long form.

सूत्र ५ – तं द्वादशप्रभेदमाचक्षते।

हिंदी: इसलिए ऌ-वर्ण को बारह-भेद वाला कहा जाता है।

English: Therefore, ‘ḷ’ is said to have twelve varieties.

सूत्र ६ – यदृच्छाशब्देऽशक्तिजानुकरणे वा यदा दीर्घाः स्युस्तदाऽष्टादशप्रभेदं ब्रूते कल्पक इति।

हिंदी: यदि किसी शब्द में या अशक्तजन्य अनुकरण में दीर्घ रूप हों – तब ऌ-वर्ण को भी अठारह भेद वाला कहा जाता है।

English: If in irregular words or weak imitation there are long forms, then ‘ḷ’ is also counted as having eighteen varieties, according to Kalpaka.

सूत्र ७ – सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वा न सन्ति।

हिंदी: सन्ध्यक्षर (ए, ऐ, ओ, औ) के ह्रस्व रूप नहीं होते।

English: The compound vowels do not have short forms**.**

सूत्र ८. तान्यपि द्वादशप्रभेदानि।

हिंदी: इसलिए ये भी बारह-भेद वाले हैं।

English: Hence, these too have twelve varieties.

सूत्र ९ – छन्दोगानां साल्यमुग्निराणायनीया अर्धमेकारमर्धमोकारं च पठन्ति।

हिंदी: छन्दोगी शाखाओं (सामवेद) में साल्यमुग्नि और राणायनी शाखा के लोग आधा एकार और आधा ओकार पढ़ते हैं।

English: In the Chhandogya schools (Sama Veda), Sālyamugnī and Rāṇāyanī branches recite half as ‘ā’ and half as ‘o’.

सूत्र १० – तेषामप्यष्टादशप्रभेदानि।

हिंदी: उन (आधा एकार-ओकार) के भी अठारह-भेद होते हैं।

English: These half ‘ā’ and half ‘o’ vowels also have eighteen varieties.

सूत्र ११ – अन्तस्था द्विप्रभेदा रेफवर्जिताः सानुनासिका निरनुनासिकाश्च।

हिंदी: अन्तःस्थ वर्ण (य, व, ल) — दो भेद वाले: सानुनासिक और निरनुनासिक।

English: Medial consonants (y, v, l) have two varieties: nasal and non-nasal.

सूत्र १२ – रेफोष्मणां सवर्णा न सन्ति।

हिंदी: र और ऊष्म वर्ण (श, ष, स, ह) के सवर्ण नहीं होते।

English: The ‘r’ and tense sounds (ś, ṣ, s, h) do not have similar (savarṇa) counterparts.

सूत्र १३ – वेदाः ध्वनिस्वरप्रधानाः, नानाविधसूक्ष्मध्वनिसमन्विताः॥

हिंदी: वेद ध्वनि और स्वर के प्रधान हैं तथा अनेक प्रकार की सूक्ष्म ध्वनियों से युक्त हैं।

English : The Vedas are primarily based on sound and intonation, and are composed of various subtle phonetic elements.

सूत्र १४ – वर्णो वर्णेन सवर्णः।

हिंदी: एक वर्ण दूसरे वर्ण का सवर्ण होता है – अर्थात जिनके स्थान और प्रयत्न समान हों वे परस्पर सवर्ण कहलाते हैं।

English: One sound is called savarṇa of another — i.e., consonants with the same place and effort are considered similar.

काल प्रकरण -

सूत्र १५ – एका मात्रा ह्रस्व उच्यते। द्वे मात्रे दीर्घ उच्येते। त्रयो मात्राः प्लुते ज्ञेयाः। अर्धमात्रा व्यञ्जनस्य च॥

हिंदी : एक मात्रा ह्रस्व कहलाती है। दो मात्राएँ दीर्घ कही जाती हैं। तीन मात्राएँ प्लुत मानी जाती हैं। और व्यञ्जन की मात्रा आधी (अर्धमात्रा) होती है।

English : One mātrā is called a short vowel (hrasva). Two mātrās are termed long (dīrgha). Three mātrās are known as pluta. A consonant carries half a mātrā.

सूत्र १६ – ह्रस्वस्य रूपं जानीयाच्चतुर्भिरणुभिस्तथा। दीर्घस्य द्विगुणं विद्यात्त्रिगुणं तत्प्लुतस्य च॥
द्वाभ्यामणुभ्यामर्धमात्रा, चतुर्भिर्मात्रा स्मृता॥

हिंदी : ह्रस्व स्वर ४ अणुओं का होता है। दीर्घ उसका दुगुना (८ अणु) और प्लुत तीन गुना (१२ अणु) होता है। २ अणुओं से अर्धमात्रा बनती है, और ४ अणु मिलकर एक मात्रा मानी जाती है।

English : A short vowel consists of four aṇus. A long vowel is double (8 aṇus), and a pluta is triple (12 aṇus). Two aṇus constitute a half-mātrā, and four aṇus make one mātrā.

सूत्र १७ – अणुस्त्रादिरिति प्राज्ञैः मतो विवर्त्मणाः॥

हिंदी: विद्वानों के अनुसार अणु ध्वनि का सूक्ष्मतम एकक है, जो क्रमशः विभिन्न अवस्थाओं (जैसे मन, वाणी, उच्चारण) में विकसित होता है।

English : According to the learned, the aṇu is the subtlest unit of sound, which unfolds progressively through different stages (such as mental, vocal, and articulated states).

सूत्र १८ – मनोऽवस्थमणु विन्द्याद्वागवस्थं द्विराणवम्। त्रिराणवं तु जिह्वाग्रे निसृतो मात्रिकः स्मृताः॥
हिंदी: मन में स्थित ध्वनि १ अणु की होती है। वाणी की अवस्था में वह २ अणु की होती है। और जिह्वा से निकली ध्वनि ३ अणु की मानी जाती है – यही मात्रा का आधार है।

English : Sound in the mental state is to be understood as one aṇu. In the stage of speech, it becomes two aṇus. When it is articulated at the tip of the tongue, it is three aṇus — this is regarded as the basis of mātrā (measure).

सूत्र १९ – स्वस्थे नरे सुखासीने यावत्स्पन्दति लोचनम्। तावन्मात्रं विजानीयादिह कालः स पञ्चसु॥

हिंदी: जब कोई व्यक्ति स्वस्थ और शांत बैठा हो, उसकी आँख जितने समय में एक बार झपकती है, उतना समय एक मात्रा माना जाता है।

English: For a calm and seated person, the time taken for one blink of the eye is to be understood as one mātrā (unit of time).

सूत्र २० – अङ्गुलिस्फोटनं यावत्तावन्नित्यं परे विदुः। ह्रस्वदीर्घप्लुताख्यानामचां मात्रा विगृह्यते॥ तस्यार्धं व्यञ्जनस्य स्यात् अर्धमात्रा प्रकीर्तिता॥

हिंदी : जितने समय में उँगली से चुटकी बजती है, उतना समय एक मात्रा माना जाता है। इसी आधार पर ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत स्वरों की मात्राएँ निर्धारित होती हैं। उसका आधा भाग व्यञ्जन का होता है, जिसे अर्धमात्रा कहा गया है।

English : The time taken to snap the fingers is regarded as one mātrā. Based on this, the measures of short, long, and pluta vowels are determined. Half of that duration belongs to a consonant, known as a half-mātrā.

सूत्र २१– चाषस्तु वदते मात्रां, द्विमात्रं चैव वायसः। शिखी रौति त्रिमात्रं तु, नकुलस्त्वर्धमात्रकम्॥

हिंदी : चाष (एक पक्षी) एक मात्रा का उच्चारण करता है। कौआ (वायस) दो मात्राओं का। मोर (शिखी) तीन मात्राओं का स्वर निकालता है। और नेवला (नकुल) आधी मात्रा का उच्चारण करता है।

English : The sparrow (cāṣa) produces a sound of one mātrā. The crow (vāyasa) produces two mātrās. The peacock (śikhī) calls in three mātrās. The mongoose (nakula) produces a half-mātrā sound.

सूत्र २२ – संयोगे प्रत्येकं व्यञ्जनम् एकैकस्वराश्रितम् । तदनुसारं मात्रा, स्पष्टोच्चारणं च कार्यम् ॥

हिंदी: क्योंकि व्यञ्जन स्वर के बिना नहीं हो सकता, इसलिए स्वर उसका मित्र है। यह मित्रता मात्रा के रूप में प्रकट होती है।

English : Since a consonant cannot exist without a vowel, the vowel is its companion. This companionship is expressed in the form of mātrā.

सूत्र २३ – संयोगे प्रत्येकं व्यञ्जनम् एकैकस्वराश्रितम् । तदनुसारं मात्रा स्पष्टोच्चारणं च कार्यम् । स्वरपरोऽपि शुद्धव्यञ्जनः अर्धमात्र एव ॥

हिंदी: जब व्यञ्जन स्वर के संयोग में आता है, तब वह उस स्वर का आश्रय लेता है। उसी स्वर के अनुसार उसकी मात्रा गिनी जाती है और उसका स्पष्ट उच्चारण करना चाहिए। किन्तु जो व्यञ्जन शुद्ध हो – अर्थात् जिसके साथ कोई स्वर न हो – वह स्वर के बाद आने पर भी **अर्धमात्रा ही रहता है, अधिक नहीं।**

English ; When a consonant comes into contact with a vowel, it takes support of that vowel. Its duration (mātrā) is counted according to that vowel, and it must be pronounced clearly. However, a pure consonant — one that carries no vowel — **remains only half a mātrā (ardha-mātrā), even when it follows a vowel.**

सूत्र २४ – संयोगवर्णेषु बहवः व्यञ्जनाः भवन्ति। अन्त्यं व्यञ्जनं स्वरं धारयति। पूर्वाणि सर्वाणि अर्धमात्राणि, अन्त्यं तु स्वरयुक्तं पूर्णमात्रां वहति॥

हिंदी : संयुक्त वर्णों में अनेक व्यञ्जन होते हैं। अन्तिम व्यञ्जन स्वर को धारण करता है।पहले के सभी व्यञ्जन आधी मात्रा के होते हैं, और अन्तिम व्यञ्जन स्वर सहित पूर्ण मात्रा देता है।

English : In conjunct letters, multiple consonants occur. The final consonant carries the vowel.All preceding consonants have half a mātrā,while the final consonant, with the vowel, bears the full measure.

उदाहरण – सही गणना

संयुक्त वर्ण	घटक	गणना	कुल
क्षा	क् + ष + आ	½ + ½ + २	= ३
त्रि	त् + र + इ	½ + ½ + १	= २
स्त्री	स् + त् + र + ई	½ + ½ + ½ + २	= ३½
प्र	प् + र + अ	½ + ½ + १	= २
ज्ञा	ज् + ञ + आ	½ + ½ + २	= ३

नोट: संयोग वर्णों का **स्वर के बिना उच्चारण** शास्त्रानुसार अधूरा और गलत माना जाता है।

।। इति षष्ठः पादः ।।

पादः ७ – क्रमप्रकरणम्

वर्णक्रम-प्रकरणम्

सूत्र १ – अथातो वर्णक्रमः।

हिंदी : अतः अब वर्णक्रम (वर्णों की व्यवस्था) प्रस्तुत किया जाता है।

संक्षेप में: अब वर्णक्रम की व्याख्या/क्रम है।

English : Hence, now follows the sequence of letters (varṇakram).

In short: "Now, the arrangement of letters is presented.

सूत्र २ – तत्र स्वराः प्रथमम्।

हिंदी : वहाँ (अर्थात वर्णक्रम में) स्वर पहले हैं।

संक्षेप में: सबसे पहले स्वर आते हैं।

English : There, the vowels come first.

In short: "In the sequence, vowels appear first.

सूत्र ३ – अ आ आ३।

हिंदी : अ, आ, आ३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: स्वरों का समय/मात्रा इस प्रकार है: ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

English : अ, आ, आ३ – vowels.

In short: The duration of vowels is: short, long, pluta.

सूत्र ४ – इ ई ई३।

हिंदी : इ, ई, ई३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: स्वरों का समय/मात्रा इस प्रकार है: ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

English : इ, ई, ई३ – vowels.

In short: **The duration of vowels is: short, long, pluta.**

सूत्र ५ – उ ऊ ऊ३।

हिंदी में: उ, ऊ, ऊ३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: स्वरों का समय/मात्रा इस प्रकार है: ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

English : उ, ऊ, ऊ३ – vowels.

In short: The duration of vowels is: short, long, pluta.

सूत्र ६ – ऋ ॠ ॠ३।

हिंदी : ऋ, ॠ, ॠ३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: इस स्वर का समय/मात्रा इस प्रकार है: ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

English : ऋ, ॠ, ॠ३ – vowels.

In short: The duration of this vowel is: short, long, pluta.

सूत्र ७ – ऌ ॡ३।

हिंदी : ऌ, ॡ३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: इस स्वर का समय/मात्रा इस प्रकार है: ह्रस्व और प्लुत।
(ध्यान दें: इस स्वर का दीर्घ रूप नहीं होता, केवल ह्रस्व और प्लुत ही हैं।)

English : ऌ, ॡ३ – vowels.

In short: The duration of this vowel is: short and pluta.
(Note: This vowel does not have a long form, only short and pluta.)

सूत्र ८ – अथ सन्ध्यक्षराणि।

हिंदी : अब (अर्थात वर्णक्रम में) संधि के अक्षर प्रस्तुत किए जाते हैं।
संक्षेप में: अब संध्यक्षर हैं।

English : conjunct letters (formed by combining sounds in Sandhi)

In short: Now come the conjunct letters (Sandhya letters).

सूत्र ९ – ए ए३।

हिंदी : ए, ए३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: स्वर 'ए' का समय/मात्रा इस प्रकार है: दीर्घ और प्लुत।
(इस स्वर का ह्रस्व रूप नहीं होता।)

English : ए, ए३ – vowels.

In short: The duration of the vowel 'ए' is: long and pluta.
(Note: This vowel does not have a short form, only long and pluta.)

सूत्र १० – ऐ ऐ३।

हिंदी : ऐ, ऐ३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: स्वर 'ऐ' का समय/मात्रा इस प्रकार है: दीर्घ और प्लुत।
(इस स्वर का ह्रस्व रूप नहीं होता।)

English : ऐ, ऐ३ – vowels.

In short: The duration of the vowel 'ऐ' is: long and pluta.
(Note: This vowel does not have a short form, only long and pluta.)

सूत्र ११ – ओ ओ३।

हिंदी : ओ, ओ३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: स्वर 'ओ' का समय/मात्रा इस प्रकार है: दीर्घ और प्लुत।
(इस स्वर का ह्रस्व रूप नहीं होता।)

English : ओ, ओ३ – vowels.

In short: The duration of the vowel 'ओ' is : long and pluta.
(Note: This vowel does not have a short form, only long and pluta.)

सूत्र १२ – औ औ३।

हिंदी : औ, औ३ – स्वर हैं।

संक्षेप में: स्वर 'औ' का समय/मात्रा इस प्रकार है: दीर्घ और प्लुत।
(इस स्वर का ह्रस्व रूप नहीं होता।)

English : औ, औ३ – vowels.

In short: The duration of the vowel 'औ' is: long and pluta.
Note: This vowel does not have a short form, only long and pluta.

सूत्र १३ – इति स्वराः।

हिंदी : इस प्रकार सभी स्वर पूर्ण हुए।
संक्षेप में: स्वरों का क्रम पूर्ण हुआ।

English : Thus, the vowels are complete.
In short: The sequence of vowels is now complete.

सूत्र १४ – अथ व्यञ्जनानि।

हिंदी : अब व्यंजन प्रस्तुत किए जाते हैं।
संक्षेप में: या सरल रूप में: "अब वर्णक्रम में व्यंजन आरंभ होते हैं।

English : In short: Now come the consonants (Vyanjanas).
In short: The sequence of consonants begins now.

सूत्र १५ – कखगघङ कवर्गः।

हिंदी : क ख ग घ ङ = क-वर्ग के व्यंजन

English : क ख ग घ ङ = consonants of the Ka group

सूत्र १६ – चछजझञा चवर्गः।

हिंदी : च छ ज झ ञ = च-वर्ग के व्यंजन

English : च छ ज झ ञ = consonants of the Ca group

सूत्र १७ – टठडढणा टवर्गः।

हिंदी : ट ठ ड ढ ण = ट-वर्ग के व्यंजन

English : ट ठ ड ढ ण = consonants of the Ṭa group

सूत्र १८ – तथदधना तवर्गः।

हिंदी : त, थ, द, ध, न = त-वर्ग के व्यंजन

English : त, थ, द, ध, न = consonants of the Ta group

सूत्र १९ – पफबभमा पवर्गः।

हिंदी : प, फ, ब, भ, म = प-वर्ग के व्यंजन

English : प, फ, ब, भ, म = consonants of the Pa group

सूत्र २० – इति स्पर्शाः।

हिंदी : स्पर्श वर्ण पूरे हो गए / स्पर्श व्यंजन समाप्त।

सरलभाषा में : अब **स्पर्श (त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ, क, ख ... आदि)** वर्ग के व्यंजन पढ़ाए गए और पूर्ण हुए।

English : The sparsha consonants are complete / finished.

Simple Meaning : Now all sparsha (plosive/stop) consonants have been presented and completed.

सूत्र २१ – अथान्तःस्थाः।

हिंदी : अब अन्तःस्थ व्यंजन प्रस्तुत किए जाते हैं।

सरल भाषा में : अब उन व्यंजनों का वर्णन आरंभ होता है जो **स्वर और व्यंजन के बीच (मध्य स्थान)** में उच्चारित होते हैं।

English : Now come the antahstha (semi-vowel) consonants.

Simple Meaning : These are consonants pronounced in an **intermediate position between vowels and consonants**.

सूत्र २२ – यरलवा।

हिंदी : य र ल व = अन्तःस्थ व्यंजन / semi-vowels

English : य र ल व = antahstha consonants / semi-vowels

सूत्र २३ – अथोष्माणः।

हिंदी : अब ऊष्मा व्यंजन प्रस्तुत किए जाते हैं।

English : Now come the fricative (ushma) consonants.

सूत्र २४ – शषसहा।

हिंदी : श ष स ह = ऊष्मा व्यंजन

English : श ष स ह = fricative consonants

सूत्र २५ – अथायोगवाहाः।

हिंदी : अब अयोगवाह वर्ण प्रस्तुत किए जाते हैं।

सरल रूप में: अब वर्णक्रम में अयोगवाह वर्णों का आरंभ होता है।

English : Now come the ayogavaha sounds.

or Simple form: Now begin the ayogavaha sounds.

सूत्र २६ – अः विसर्जनीयः।

हिंदी : अः = विसर्ग (ः)

English : "अः" = visarga (ḥ)

सूत्र २७ – ५क जिह्वामूलीयः।

हिंदी :

- "५क" = जिह्वामूलीय चिह्न (visarga before क/ख)
- "जिह्वामूलीयः" = जिह्वा के मूल से उच्चारित ध्वनि

सरल रूप में: जब विसर्ग (ः) के बाद क या ख आता है, तब वह जिह्वामूलीय रूप से उच्चारित होता है।

English :

- "५क" = jivhāmūlīya sign (visarga before ka/kha)
- "जिह्वामूलीयः" = sound produced from the root of the tongue

or Simple form: When visarga (ḥ) is followed by ka or kha, it is pronounced as a jivhāmūlīya sound.

सूत्र २८ – ५प उपध्मानीयः।

हिंदी :

- "५प" = उपध्मानीय चिह्न (विसर्ग का विशेष रूप, प/फ से पहले)
- उपध्मानीयः = ओष्ठ्य ध्वनि (होंठों से उच्चारित)

सरल रूप में: जब विसर्ग (ः) के बाद प या फ आता है, तब वह उपध्मानीय रूप से उच्चारित होता है।

English :

- "५प" = upadhmānīya sign (visarga before pa/pha)

- “उपध्मानीयः” = labial sound

or Simple form: When visarga (ḥ) is followed by pa or pha, it is pronounced as an upadhmānīya sound.

सूत्र २९ – अं अनुस्वारः।

हिंदी :

- “अं” = अनुस्वार (ं)
- “अनुस्वारः” = अनुस्वार ध्वनि

सरल रूप में: अब वर्णक्रम में अनुस्वार (ं) का वर्णन किया जाता है।

English : “अं” = anusvāra (ṃ)

- “अनुस्वारः” = nasal sound

or Simple form: Now the nasal sound (anusvāra) is introduced.

सूत्र ३० – कुँ खुँ गुँ घुँ यमाः।

हिंदी :

- “कुँ खुँ गुँ घुँ” = यम वर्ण
- “यमाः” = यम ध्वनियाँ

संक्षेप में: यम वर्ण प्रस्तुत हैं।

सरल रूप में: ये वे वर्ण हैं जिनमें नासिक्य (nasal) गुण जुड़ा हुआ है, अर्थात् यम वर्ण।

English :

- “kũ khũ gũ ghũ” = yama sounds
- “यमाः” = nasalized phonetic elements

In short: The yama sounds are presented.

or Simple form: These are nasalized (yama) sounds associated with these consonants.

सूत्र ३१ – एते त्रिषष्टिवर्णाः।

हिंदी : ये त्रेसठ वर्ण हैं।

सरल रूप में: अब तक वर्णित सभी मिलाकर कुल ६३ वर्ण होते हैं।

English : These are the sixty-three letters.

or Simple form: All the above together constitute sixty-three phonetic units (varṇas).

सूत्र ३२ – हुँ नासिक्यः।

हिंदी : नासिक्य ध्वनि प्रस्तुत है।

सरल रूप में: "यह वह ध्वनि है जो नासिका (नाक) से उच्चारित होती है।"

English : The nasal sound is presented.

or Simple form: This is a sound pronounced through the nose (nasal sound).

सूत्र ३३ – एते चतुःषष्टिः।

हिंदी : ये चौंसठ वर्ण हैं।

सरल रूप में: अब तक वर्णित सभी मिलाकर कुल ६४ वर्ण होते हैं।

English : These are the sixty-four letters.

or Simple form: All the above together constitute sixty-four phonetic units (varṇas).

सूत्र ३४ – एष क्रमो वर्णानाम्।

हिंदी : यह वर्णों का क्रम है।

सरल रूप में: यह सम्पूर्ण वर्णों का व्यवस्थित क्रम (अनुक्रम) है।

English : This is the sequence of the letters.

or Simple form: This represents the systematic order of all phonetic units (varṇas)

सूत्र ३५ - वर्णाः अर्थप्रकाशिकाः

हिंदी : वर्ण (अक्षर/ध्वनियाँ) अर्थ को प्रकाशित करने वाले होते हैं।

या थोड़ा विस्तार से: वर्ण वे हैं जो अर्थ को प्रकट करते हैं।

English : Letters (phonetic units) are revealers of meaning.

or more clearly: Sounds/letters are that which express or illuminate meaning.

सूत्र ३६ - वर्णाः शक्तिस्वरूपाः॥

हिंदी : वर्ण (ध्वनियाँ/अक्षर) शक्ति के स्वरूप हैं।

या विस्तार से: वर्ण स्वयं शक्ति के रूप में विद्यमान हैं।

English : Letters (sounds) are forms of power.

or more clearly: Phonetic units (letters/sounds) are manifestations of energy.

सूत्र ३७ गुरोः अध्ययनाभ्यासाभ्यां वर्णज्ञानप्राप्तिः॥

हिंदी : गुरु से वर्णज्ञान की प्राप्ति होती है।

English : Knowledge of letters is obtained from the teacher.

क्रम-सिद्धान्त-प्रकरणम्

सूत्र ३८ – तत्रैषां स्थानकरणप्रयत्नानां कथंप्रसिद्धिरित्युच्यते।

हिंदी : अब इन वर्णों के स्थान, करण और प्रयत्न कैसे होते हैं, यह बताया जाता है।

सरल रूप में: अब यह समझाया जाएगा कि वर्णों का उच्चारण कहाँ (स्थान), किन साधनों से (करण), और किस प्रकार के प्रयास से (प्रयत्न) होता है।

English : Now it is explained how the place, organs, and effort of articulation of these letters are understood.

or Simple form: This section explains how the letters are produced — their place, organs, and manner of articulation.

सूत्र ३९ – इह यत्र स्थाने वर्णा उपलम्यन्ते तत् स्थानम्।

हिंदी : जहाँ वर्ण उच्चारित होते हैं, वही उनका स्थान है।

सरल रूप में: वर्णों के उच्चारण का जो स्थान होता है, उसी को स्थान (place of articulation) कहते हैं।

English : The place where sounds are produced is called their place (of articulation).

or Simple form: The location in the mouth where a sound is articulated is called its place of articulation.

सूत्र ४० – येन निबृत्यन्ते तत् करणम्।

हिंदी : जिससे वर्ण उच्चारित होते हैं, वही करण है।

सरल रूप में: वर्णों के उच्चारण में जिन साधनों (जिह्वा, ओष्ठ आदि) का प्रयोग होता है, उन्हें करण कहते हैं।

English : That by which sounds are produced is called the instrument (organ of articulation).

or Simple form: The organs used in producing speech sounds (like tongue, lips, etc.) are called ‘karana’.

सूत्र ४१ – प्रयतनं प्रयत्नः।

हिंदी : उच्चारण का प्रयास ही प्रयत्न कहलाता है।

सरल रूप में: वर्णों को बोलने में जो प्रयास या क्रिया होती है, उसे प्रयत्न कहते हैं।”

English : “Effort in pronunciation is called ‘prayatna’.”

Simple form: “The effort involved in producing a sound is called articulation effort (prayatna).”

सूत्र ४२ – उत्साहः प्रयत्नः।

हिंदी : उत्साह ही प्रयत्न है।

सरल रूप में: वर्णों के उच्चारण में जो उर्जा या प्रयास लगाया जाता है, वही प्रयत्न कहलाता है।

English : Effort (energy) is called 'prayatna'.

or Simple form: The energy or exertion used in producing speech sounds is called articulatory effort (prayatna).

सूत्र ४३ – स्पृष्टतादि वर्णगुणः।

हिंदी : स्पृष्टता आदि वर्णों के गुण हैं।

सरल रूप में: वर्णों के उच्चारण में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के स्पर्श और खुलाव (जैसे स्पृष्ट, विवृत आदि) होते हैं, वे उनके गुण कहलाते हैं।

English : Complete contact and similar features are qualities of speech sounds.

or Simple form: The different modes of articulation (like complete contact, partial contact, openness, etc.) are qualities of phonetic sounds.

सूत्र ४४ – स्थानात् करणम्, करणात् प्रयत्नः, प्रयत्नात् नादः, नादेन स्फोटाभिव्यक्तिः, स्फोटात् वर्णबुद्धिः, वर्णबुद्धेः पदबुद्धिः, पदबुद्धेः वाक्यबुद्धिः, वाक्यात् अर्थप्रतीतिः।

हिंदी : स्थान से करण, करण से प्रयत्न, प्रयत्न से नाद उत्पन्न होता है। नाद से स्फोट की अभिव्यक्ति होती है। स्फोट से वर्ण की बुद्धि, वर्ण से पद की बुद्धि, पद से वाक्य की बुद्धि और वाक्य से अर्थ की प्रतीति होती है।

सरल रूप में: वाणी की उत्पत्ति और समझ इस प्रकार होती है –
पहले उच्चारण का स्थान होता है, फिर उससे करण (जैसे जिह्वा, ओष्ठ) कार्य करते हैं, उनसे प्रयत्न होता है, उससे ध्वनि (नाद) उत्पन्न होती है। उस ध्वनि के द्वारा स्फोट प्रकट होता है, जिससे हम वर्ण को समझते हैं, फिर शब्द (पद), फिर वाक्य, और अंत में उसका अर्थ समझ में आता है।

English : From place arises the organ, from the organ effort, from effort sound; through sound the sphoṭa is manifested. From sphoṭa arises the cognition of phonemes, from phonemes the cognition of words, from words the cognition of sentences, and from sentences the understanding of meaning.

Simple form: "Speech is produced and understood in a sequence:
First comes the place of articulation, then the organs act, then effort is applied, producing sound. Through sound, the sphoṭa (meaning-bearing unit) is revealed. From this, we perceive phonemes, then words, then sentences, and finally the meaning."

संज्ञा-नामकरण-प्रकरणम्

सूत्र ४५ – नामकारणं वर्णानाम्।

हिंदी : वर्णों के नाम का कारण बताया जाता है।

सरल रूप में: अब यह समझाया जाएगा कि वर्णों के नाम क्यों और कैसे रखे गए हैं।

English : The naming of the letters is explained.

or Simple form: This explains the basis on which the letters (varṇas) are named.

सूत्र ४६ – न क्षरति इति अक्षरः।

हिंदी : जो नष्ट नहीं होता, वही अक्षर है।

सरल रूप में: अक्षर वह है जो कभी क्षय (नाश) को प्राप्त नहीं होता, अर्थात् स्थायी ध्वनि-तत्त्व।

प्रश्न

मैंने 'अ' का उच्चारण किया, वह समाप्त हो गया – फिर वह 'अक्षर' (अविनाशी) कैसे हुआ?

जब हम "अ" का उच्चारण करते हैं, तब जो ध्वनि सुनाई देती है, वह **नाद (ध्वनि)** होती है, और वह वास्तव में क्षणिक होकर तुरंत नष्ट हो जाती है। किन्तु "अ" की जो पहचान या उसका स्वरूप (form/pattern) है, वह हमारी बुद्धि में स्थिर रहता है और नष्ट नहीं होता।

अतः अक्षर का नाश नहीं होता, क्योंकि वह केवल बाह्य ध्वनि नहीं, बल्कि उसका स्थायी स्वरूप है। नाद तो क्षणभंगुर है, परन्तु अक्षर का स्वरूप नित्य रहता है। वही अक्षर बार-बार भिन्न-भिन्न ध्वनियों के माध्यम से प्रकट होता है, किन्तु स्वयं कभी नष्ट नहीं होता।

निष्कर्ष सूत्र

"नादः नश्यति, अक्षरस्य तु स्वरूपं न नश्यति; नादः अभिव्यंजकः, अक्षरं तु अभिव्यज्यम्।"

ध्वनि (नाद) नष्ट हो जाती है, लेकिन अक्षर का असली रूप कभी नष्ट नहीं होता।
ध्वनि केवल उसे प्रकट करती है, और अक्षर वही है जो उस ध्वनि से प्रकट होता है।

और भी सरल में:

आवाज़ खत्म हो जाती है, लेकिन अक्षर की पहचान बनी रहती है।

English : That which does not perish is called 'akṣara'.

or Simple form: An 'akṣara' is that which is imperishable — a stable unit of sound.

Question

I pronounced ‘a’, and it disappeared—then how is it called ‘akṣara’ (imperishable)?

Explanation

When we pronounce “a”, the sound that is heard is **nāda (sound)**, and it is indeed momentary—it fades away immediately after being uttered.

However, the **identity or form (pattern)** of “a” remains stable in our intellect (mind) and does not perish.

Therefore, an *akṣara* does not perish, because it is not merely an external sound, but its **underlying stable form**. Sound is transient, but the form of the letter remains constant.

The same letter manifests again and again through different sounds, yet it never truly ceases to exist.

Concluding Principle

“Nāda perishes, but the essential form of the akṣara does not perish; sound is the manifesting agent, while the akṣara is that which is manifested.”

Simple Meaning : Sound disappears, but the true form of the letter never disappears. Sound only reveals it, and the letter is what is revealed through sound.

In even simpler terms: **The sound fades away, but the identity of the letter remains.**

सूत्र ४७ – वर्ण्यते इति वर्णः।

हिंदी : जो प्रकट करे या व्यक्त करे, वही वर्ण कहलाता है।

सरल रूप में: जिस ध्वनि या अक्षर से विचार या अर्थ बाह्य रूप से प्रकट होता है, वही वर्ण है।

उदाहरण:

- “अ” बोलते समय जो ध्वनि सुनाई देती है, वह विचार का प्रकट रूप है।
- इसी तरह “क”, “म”, “श” आदि अक्षर विचार या अर्थ को व्यक्त करते हैं।
- इसलिए कहा गया कि **जो प्रकट करे, वही वर्ण है।**

English : Varṇyate iti varṇaḥ.

The letter (varṇa) is that which **manifests or expresses**.
In other words : the sound or syllable through which a thought or meaning is externally revealed is called a varṇa.

Example:

- When we pronounce “a”, the sound that is heard is the manifestation of that thought.
- Similarly, letters like “ka”, “ma”, “sha” express meaning or ideas.
- Hence, **that which manifests is called a varṇa.**

सूत्र ४८ – स्वयं राजते इति स्वरः।

हिंदी : जो **स्वयं प्रकट होता है**, वही **स्वर (अक्षर का ध्वन्यात्मक भाग)** कहलाता है।

- स्वर वह ध्वनि है जो किसी अन्य व्यंजन के सहारे नहीं, बल्कि **स्वयं स्वतंत्र रूप से उच्चारित और सुनी जाती है।**
- स्वर केवल विचार प्रकट नहीं करता, बल्कि वह **ध्वनि का मूल आधार** भी है।

उदाहरण:

- "अ, इ, उ, ए, ओ" आदि स्वर स्वयं उच्चारित होते हैं और उनकी पहचान स्वतंत्र है।
- व्यंजन स्वरों के सहारे ही उच्चारित होते हैं, पर स्वर अपने आप प्रकट होता है।
- इसलिए कहा गया कि **जो स्वयं प्रकट हो, वही स्वर है।**

English : Svaṃ rājate iti svaraḥ.

A vowel (svara) is that which **shines or manifests on its own**.

- It is the sound that can be pronounced and heard **independently**, without the help of a consonant.
- Vowels not only express ideas but also form the **fundamental basis of sound**.

Example:

- Vowels like "a, i, u, e, o" can be pronounced on their own and have independent recognition.
- Consonants are pronounced with vowels, but vowels manifest independently.
- Hence, **that which manifests on its own is called a vowel (svara).**

सूत्र ४९ – "सन्धौ जायते इति सन्ध्यक्षरम्।"

हिंदी : सन्ध्यक्षर वह अक्षर है जो **सन्धि के कारण उत्पन्न होता है।**

सरल शब्दों में: जब दो अक्षर या शब्द सन्धि के नियम से मिलकर नया रूप लेते हैं, तो जो अक्षर उसमें उत्पन्न होता है, वह सन्ध्यक्षर कहलाता है।

उदाहरण:

- राम + इन्द्र → **रामेन्द्र** → यहाँ "ए" सन्धिक्षर है।

English : Sandhyakshara is the letter that arises due to Sandhi (combination) rules.

Simple meaning: When two letters or words combine according to Sandhi rules to form a new form, the letter that appears in the combination is called the Sandhyakshara.

Examples:

- **Rāma + Indra → Rāmendra** → here "e" is the Sandhyakshara

सूत्र ५० – व्यञ्जयति इति व्यञ्जनम्।

हिंदी : जो प्रकट करे या व्यक्त करे, वही व्यञ्जन कहलाता है।

- व्यञ्जन वह वर्ण है जो **स्वर के सहारे** उच्चारित होता है और विचार या ध्वनि को प्रकट करता है।

- व्यञ्जन स्वतंत्र स्वरूप से उच्चारित नहीं होता, बल्कि इसे **स्वर के सहयोग से** बोलकर पहचाना जाता है।

उदाहरण:

- “क, ग, म, त” आदि व्यञ्जन हैं।
- “क” केवल “अ” के साथ मिलकर “क” उच्चारित होता है।
- इसलिए कहा गया कि **जो प्रकट करे, वही व्यञ्जन है।**

English : Vyañjayati iti vyañjanam.

A consonant (vyañjana) is that which **manifests or expresses**.

- Consonants are pronounced **with vowels** and are used to manifest sound or meaning.
- A consonant cannot be pronounced independently; it requires a vowel to be heard.

Example:

- Letters like “ka, ga, ma, ta” are consonants.
- “Ka” is pronounced with the vowel “a” to produce the sound.
- Hence, **that which manifests through combination is called a consonant (vyañjana).**

सूत्र ५१ – स्पृश्यन्ते उच्चारणे इति स्पर्शाः।

हिंदी : स्पर्श (Plosives / Stop consonants) वे वर्ण हैं जो उच्चारण के समय किसी अंग से अवरोध उत्पन्न करके प्रकट होते हैं।

- उच्चारण के दौरान जीभ, होंठ, तालू आदि किसी स्थान को छूकर या बंद करके ध्वनि उत्पन्न होती है।
- इसलिए कहा गया कि **जो स्पर्श द्वारा उत्पन्न हो, वही स्पर्श वर्ण है।**

उदाहरण:

- “क, ट, प, त” आदि वर्ण स्पर्श वर्ण हैं।
- “ट” उच्चारित करने के समय जिह्वा तालू को छूती है और ध्वनि प्रकट होती है।
- इसी प्रकार “प” उच्चारण में होंठ मिलते हैं और ध्वनि उत्पन्न होती है।

English : Spṛsha (Plosives / Stop consonants) are those letters which are produced by creating an obstruction in some articulatory organ during pronunciation.

- During pronunciation, the tongue, lips, palate, or other organs touch or block a point to generate the sound.
- Hence, it is said that **those sounds produced by touch/obstruction are called spṛsha (stop consonants).**

Examples:

- Letters like “ka, ṭa, pa, ta” are spṛsha consonants.
- When pronouncing “ṭa”, the tongue touches the palate and the sound is produced.
- Similarly, when pronouncing “pa”, the lips come together and the sound is generated.

सूत्र ५२ – वृज्यन्ते इति वर्गः। समूह – वर्ग।

हिंदी : “वर्ग” वह समूह (group / set) है जिसमें वर्ण सम्मिलित होते हैं।

- “वृज्यन्ते” का अर्थ है संकलित / सम्मिलित होना।
- यानी, जिन वर्णों को एक साथ समूहबद्ध किया गया है, उन्हें वर्ग कहते हैं।

उदाहरण:

- क वर्ग → क, ख, ग, घ, ङ
- च वर्ग → च, छ, ज, झ, ञ
- ट वर्ग → ट, ठ, ड, ढ, ण
- प वर्ग → प, फ, ब, भ, म

English : “Varga” means a group or set of letters that are collected together.

- The word “vṛjyante” means **to be gathered or assembled**.
- Hence, letters that are **grouped together** are called a **varga (group)**.

Examples:

- Ka-varga → ka, kha, ga, gha, ṅa
- Ca-varga → ca, cha, ja, jha, ña
- Ṭa-varga → ṭa, ṭha, ḍa, ḍha, ṇa
- **Pa-varga → pa, pha, ba, bha, ma**

सूत्र ५३ – वर्गे पञ्च वर्णाः – प्रथमोद्वितीयस्तृतीयश्चतुर्थपञ्चमाः ।

हिंदी :

- **वर्ग में पाँच वर्ण होते हैं।**
- क्रम इस प्रकार है:
    - **प्रथम** → पहला
    - **द्वितीय** → दूसरा
    - **तृतीय** → तीसरा
    - **चतुर्थ** → चौथा
    - **पञ्चम** → पाँचवा / सर्वोत्तम

उदाहरण:

- **क वर्ग** → क (प्रथम), ख (द्वितीय), ग (तृतीय), घ (चतुर्थ), ङ (**पञ्चम**)
- **च वर्ग** → च (प्रथम), छ (द्वितीय), ज (तृतीय), झ (चतुर्थ), ञ (**पञ्चम**)

English : A varga (group) has five letters — first, second, third, fourth, and best (fifth).

- **Example:**
  - **Ka-varga** → ka (first), kha (second), ga (third), gha (fourth), ṅa (fifth)
  - **Ca-varga** → ca (first), cha (second), ja (third), jha (fourth), ña (fifth)

सूत्र ५४ – "पञ्चमाः वर्णाः उत्तमवर्णाः इति उच्यन्ते।"

हिंदी : वर्ग के पाँचवें वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) को "उत्तम वर्ण" कहा जाता है।

English : The fifth letters of each consonant class (ṅa, ña, ṇa, na, ma) are called *uttama varṇa* in Prātiśākhya texts.

सूत्र ५५ – वर्गस्य प्रथमाक्षरेण तद्वर्गः गृह्यते।

हिंदी: किसी वर्ग (group) को उसके पहले अक्षर से नामित किया जाता है।

उदाहरण:

- क वर्ग → पहले अक्षर "क" से नामित
- च वर्ग → पहले अक्षर "च" से नामित

English : A group (varga) is named after its first letter.

Examples:

- Ka-varga → named after the first letter "ka"
- Ca-varga → named after the first letter "ca"

सूत्र ५६ – वर्गसंकेतेषु (कुचुटुतुपु इत्यादिषु) प्रयुक्तः स्वरः उच्चारणसौकर्यार्थं भवति, न तु स्वतन्त्रवर्णः, न च वर्णस्वरूपनिर्णायकः॥

हिंदी : वर्ग-संकेतों (जैसे कु, चु, टु आदि) में प्रयुक्त स्वर केवल उच्चारण की सुविधा के लिए होता है। वह न तो स्वतंत्र वर्ण है और न ही वर्ण के स्वरूप को निर्धारित करता है।

English Translation: In varga-indicators (such as *ku, cu, ṭu*, etc.), the vowel used serves only for ease of pronunciation. It is neither an independent sound nor does it determine the phonetic nature of the consonant.

सूत्र ५७ – स्पर्शोष्मणोः मध्ये तिष्ठन्ति इति अन्तस्थाः।

हिंदी : ये वर्ण (य, र, ल, व) स्वर और स्पर्श व्यञ्जन के मध्यवर्ती हैं। इनका उच्चारण-प्रयत्न 'ईषत् स्पृष्ट' है – न स्वर की भाँति पूर्ण विवृत, न स्पर्श व्यञ्जन की भाँति पूर्ण स्पृष्ट। इसीलिए इन्हें 'अन्तस्थ' कहते हैं।

English : These letters (ya, ra, la, va) are medial consonants lying between vowels and plosive consonants.

- Their articulation effort is slightly touched (īṣat spṛṣṭa) —
  neither fully open like vowels, nor fully stopped like plosive consonants.
- Hence, they are called 'antastha' (medial) letters.

सूत्र ५८ – ऊष्मा वायुः प्रधानं येषाम् इति ऊष्माणः।

हिंदी : जिन वर्णों के उच्चारण में वायु (ऊष्ण वायु / संघर्षी वायु) प्रधान तत्त्व है, वे ऊष्माण (ऊष्म वर्ण) कहलाते हैं।

विस्तृत अर्थ

जब **श, ष, स, ह** का उच्चारण होता है तब –

- मुख में **पूर्ण स्पर्श नहीं** होता
- वायु **संकुचित मार्ग से** तीव्र गति से निकलती है
- इस संघर्ष (friction) से **ऊष्मा / गर्मी** उत्पन्न होती है
- यही **ऊष्मा** इनकी पहचान है

English : Letters in whose pronunciation air (hot air / forceful air) is the predominant element, are called ūṣmā (aspirated) letters.

Detailed Meaning: When **ś, ṣ, s, h** are pronounced —

- There is **no complete closure in the mouth**
- Air passes **rapidly through a constricted passage**
- This friction generates **heat (ūṣmā)**
- This **heat** is the characteristic feature that identifies these letters as **ūṣmā (aspirated) consonants**

सूत्र ५९ – प्रत्याहारयोगं विना अपि व्याकरणप्रयोगं वहन्ति ये, तेषां नाम अयोगवाहाः।

हिंदी : "अयोगवाह" वे वर्ण हैं जो दो व्यंजन के बीच स्थित होकर भी स्वतंत्र रूप से उच्चारित होते हैं।

- इसमें कहा गया है कि प्रत्याहार-योग (यानी संक्षेपित वर्णसंग्रह) के बिना भी व्याकरण प्रयोग में ये अपने आप कार्य करते हैं।

  सरल अर्थ: "जो वर्ण प्रत्याहार (संक्षिप्त वर्ण समूह) के योग के बिना भी व्याकरण प्रयोग में कार्य करते हैं, वे अयोगवाह कहलाते हैं।"

English : "**Ayogavāha**" are those letters which, though situated between two consonants, can also be pronounced independently.
It is stated that even without the use of a pratyāhāra (i.e., a condensed group of letters), these letters function on their own in grammatical usage.

Simple meaning: "Letters that can operate in grammatical usage even without the combination of a pratyāhāra (condensed letter group) are called ayogavāha."

सूत्र ६० – "विसृज्यते श्वासः इति विसर्गः।"

हिंदी : विसर्ग (ः) वह ध्वनि है जो विशेष रूप से श्वास के रूप में छोड़ी जाती है।

सरल शब्दों में: जब श्वास विशेष रूप से बाहर छोड़ी जाती है, तब वह विसर्ग कहलाता है।

विशेषताएँ:

- यह स्वर के बाद आता है।
- इसका उच्चारण हल्का और नर्म होता है।
- उदाहरण:
    - **अः** → यहाँ "ः" स्वर "अ" के बाद विसर्ग है।
    - **रामः** → "ः" राम के अंत में विसर्ग।

English : Visarga (ः) is the sound produced when breath is released in a special manner.

- Simple meaning: "When breath is expelled in a particular way after a vowel, it is called Visarga."

Examples:

- **aḥ** → "ḥ" is the Visarga after vowel "a"
- **Rāmaḥ** → "ḥ" at the end of Rāma is the Visarga

सूत्र ६१ – हकारसदृशो विसर्जनीयः

हिंदी : विसर्ग (ः) हकार के समान होता है।

विस्तार से: विसर्ग का उच्चारण हकार के सदृश (जैसा) होता है।

English : The visarga (ḥ) is similar to the sound 'ha'.

more clearly: The visarga is pronounced in a manner similar to the 'h' sound.

अर्थात् – विसर्ग का उच्चारण **हकार के सदृश** है – किन्तु हकार नहीं है।

सूत्र ६२ – देवो वः सविता चात्र हकारसदृशो भवेत्॥ देवीस्तिस्रो विसर्गस्तु हिकारसदृशो भवेत्। आखुस्ते पशुरित्यादौ हुकारसदृशो भवेत्॥ विसर्गश्चाग्नेरित्यादौ हेकारसदृशो भवेत्। विसर्गो बाहवोरित्यादौ होकारसदृशो भवेत्॥ एकेषाम्।

हिंदी : देवो वः सविता” आदि स्थानों में विसर्ग का उच्चारण हकार के समान होता है। “देवीस्तिस्रः” आदि में विसर्ग हि के समान होता है। “आखुस्ते पशुः” आदि में विसर्ग हु के समान होता है। “अग्रेः” आदि में विसर्ग हे के समान होता है। “बाहवोः” आदि में विसर्ग हो के समान होता है।यह मत कुछ आचार्यों का है।

English : In expressions like “devo vaḥ savitā,” the visarga is pronounced similar to ha. In “devīs tisraḥ,” it resembles hi. In “ākhus te paśuḥ,” it is like hu. In “agreḥ,” it is pronounced like he. In “bāhvoḥ,” it resembles ho. This is according to certain scholars.

पाँच उच्चारण-भेद

श्लोक	उदाहरण	उच्चारण
१	देवो वः सविता	**ह** सदृश
२	देवीस्तिस्रो विसर्ग	**हि** सदृश
३	आखुस्ते पशुः	**हु** सदृश
४	विसर्गश्चाग्रे	**हे** सदृश
५	विसर्गो बाहवोः	**हो** सदृश

सूत्र ६३ – जिह्वामूलसंस्पर्शाद् जिह्वामूलीयः

हिंदी : जिन व्यंजनों का उच्चारण जिह्वा (जीभ) के मूल से तालू को छूकर होता है, उन्हें जिह्वामूलीय कहते हैं।

English : Consonants that are articulated by the tongue touching the root of the tongue against the palate are called jihvāmūlīya.

सूत्र ६४ – ककारे अल्पप्राणः, खकारे महाप्राणः – इति जिह्वामूलीयो द्विधा।

हिंदी :

- “क” जैसे व्यंजन अल्पप्राण (हल्की श्वास) वाले हैं।
- “ख” जैसे व्यंजन महाप्राण (तीव्र श्वास / जोरदार) वाले हैं।
- इस प्रकार जिह्वामूलीय व्यंजन दो प्रकार के होते हैं – अल्पप्राण और महाप्राण।

English :

- Consonants like ‘ka’ are alpaprāṇa (light breath).
- Consonants like ‘kha’ are mahāprāṇa (strong breath).
- Thus, jihvāmūlīya consonants are of two types — alpaprāṇa and mahāprāṇa.

सूत्र ६५ – ओष्ठयोः समीपे ध्मानेन उच्चार्यते इति उपध्मानीयः।

हिंदी : जिन व्यंजनों का उच्चारण होंठों के समीप (near lips) ध्वनि या श्वास के द्वारा होता है, उन्हें उपध्मानीय (उपध्म व्यंजन) कहते हैं।

English : Consonants that are articulated near the lips with breath (or friction) sound are called upadhmānīya consonants.

सूत्र ६६ – पकारपरः अल्पप्राणः, फकारपरः महाप्राणः – इति उपध्मानीयो द्विधा।

हिंदी :

- "प" जैसे व्यंजन अल्पप्राण (हल्की श्वास) वाले हैं।
- "फ" जैसे व्यंजन महाप्राण (तीव्र श्वास / जोरदार) वाले हैं।
- इस प्रकार उपध्मानीय व्यंजन दो प्रकार के होते हैं – अल्पप्राण और महाप्राण।

English

- Consonants like 'pa' are alpaprāṇa (light breath).
- Consonants like 'pha' are mahāprāṇa (strong breath).
- Thus, upadhmānīya consonants are of two types — alpaprāṇa and mahāprāṇa.

सूत्र ६७ – स्पर्शवर्णस्य नासिक्यधर्मयुक्तं शुद्धरूपं यमः।

हिंदी : स्पर्शवर्ण का जो नासिक्य-धर्म (अनुनासिकता) से युक्त शुद्ध रूप है, वह यम कहलाता है।

यम कैसे बनता है

मूल वर्ण	नासिक्य धर्म	यम (अनुनासिक रूप)
क	अनुनासिकता	कँ
ख	अनुनासिकता	खँ
ग	अनुनासिकता	गँ
घ	अनुनासिकता	घँ

English : The pure form of a stop consonant (sparsha-varṇa) combined with nasalization (nāśikya-dharma) is called Yam.

H**ow Yam is formed**

Original Consonant	Nasalization	Yam (nasalized form)
k	nasalization	k̃
kh	nasalization	kh̃
g	nasalization	g̃
gh	nasalization	gh̃

सूत्र ६८ – एते विंशतिः यमाः।

हिंदी : ये बीस यम हैं।

तो यमों की संख्या

वर्ग-क्रम	यम	संख्या
कुँ (प्रथम)	कँ, चँ, टँ, तँ, पँ	५
खुँ (द्वितीय)	खँ, छँ, ठँ, थँ, फँ	५
गुँ (तृतीय)	गँ, जँ, डँ, दँ, बँ	५
घुँ (चतुर्थ)	घँ, झँ, ढँ, धँ, भँ	५
कुल		**२०**

English : These are the twenty Yamas.

Number of Yamas by Class (Varga)

Class (Varga)	Yamas (Nasalized Forms)	Count
Kuṃ (1st)	k̃, c̃, ṭ̃, t̃, p̃	5
Khuṃ (2nd)	kh̃, ch̃, ṭh̃, th̃, ph̃	5
Guṃ (3rd)	g̃, j̃, ḍ̃, d̃, b̃	5
Ghuṃ (4th)	gh̃, jh̃, ḍh̃, dh̃, bh̃	5
Total		**20**

सूत्र ६९ – यम-यमीति प्रसिद्ध-ऋक्सूक्तवशाद् यम-शब्दो द्व्यर्थवाचकः।

हिंदी :

- ऋग्वेद के प्रसिद्ध सूक्तों के अनुसार, “यम” शब्द का दो अर्थों में उपयोग होता है।
- अर्थात् यह द्व्यर्थवाचक (dual-meaning) शब्द है।

English :

- According to the famous hymns of the Rigveda, the word “Yama” has two meanings.
- That is, it is a dual-meaning (dvyarthavācaka) word.

सूत्र ७० – यस्य उच्चारणे नासिकामुखाभ्यां युगपद् वायोः निर्गमनं भवति सः अनुनासिकः।

हिंदी : जिसके उच्चारण में वायु नाक और मुख दोनों से एक साथ निकलती है, वह अनुनासिक है।

English : A sound in which the air flows simultaneously through both the nose and the mouth during pronunciation is called *anunāsika* (nasalized).

सूत्र ७१ – यस्य उच्चारणे केवलं मुखेन वायोः निर्गमनं भवति, न तु नासिकया, सः निरनुनासिकः।

हिंदी : जिसके उच्चारण में वायु केवल मुख से निकलती है, नाक से नहीं, वह निरनुनासिक है।

English : A sound in which the air flows only through the mouth and not through the nose during pronunciation is called *nir-anunāsika* (non-nasal).

सूत्र ७२ – समं युज्यन्ते इति संयुक्ताः।

हिंदी : जो (वर्ण) समान रूप से (एक साथ) जुड़े होते हैं, वे 'संयुक्त' कहलाते हैं।"

English : Those (sounds/letters) which are joined together equally (simultaneously) are called *saṁyukta* (conjunct).

संक्षिप्त व्याख्या: जब दो या अधिक व्यञ्जन बिना स्वर के बीच में आए एक साथ मिलकर उच्चारित होते हैं (जैसे – क्त, त्र, ज्ञ), तो वे 'संयुक्त' कहलाते हैं।

वर्ण-निर्देश प्रकरण

सूत्र ७३ – वर्णानां निर्देशः इतिना

हिंदी : वर्णों का निर्देश "इति" शब्द से होता है।

"क ख ग घ ङ – कवर्गः" इति, "अ इति स्वरः" "क इति व्यञ्जनम्"

English : The indication (or specification) of letters is done by the word 'iti'.

सूत्र ७४ – वर्णानां निर्देशः कारेण च

हिंदी : "**कार**" जोड़कर भी वर्ण का निर्देश होता है।

य + कार = यकार., व + कार = वकार, क + कार = ककार

English : The indication (or naming) of a letter is also done by adding '-kāra'.

सूत्र ७५ – रस्य निर्देशः रेफेन

हिंदी : रकार का निर्देश "रेफ" शब्द से होता है।

र = रेफ, अन्य व्यञ्जन → कार से, र → रेफ से (अपवाद)

English : The letter 'ra' is indicated by the term 'repha'.

सूत्र ७६ – अकाराव्यवहितेन कारेण व्यञ्जनस्य निर्देशः, न स्वरस्य

हिंदी : अकार से सीधे जुड़े "कार" से व्यञ्जन का निर्देश होता है – स्वर का नहीं।

व्यञ्जन – क् + अ + कार = ककार, स्वर – अकार, इकार इस विधि से नहीं

English : "The indication of a consonant is made by adding '-kāra' directly after 'a' (without any intervening element), not of a vowel.
A consonant is denoted as: k + a + kāra = kakāra. Vowels, however, are not denoted in this way (e.g., akāra, ikāra are not formed by this method)."

सूत्र ७७ – नानुस्वार-यम-विसर्जनीय-जिह्वामूलीय-उपध्मानीय-नासिक्यानां कारेण निर्देशः

हिंदी : इन छः की संज्ञा "कार" से नहीं – स्वशब्द से –

अं = अनुस्वारः, अः = विसर्जनीयः. ×क = जिह्वामूलीयः, ×प = उपध्मानीयः, ञुँ = यमः, ँ = नासिक्यः

English : "The indication (naming) of *anusvāra, yama, visarga, jihvāmūlīya, upadhmānīya,* and nasal sounds is not done by adding '-kāra'."

सूत्र ७८ – ह्रस्वग्रहणे दीर्घप्लुतौ च प्रतीयेताम्

हिंदी : ह्रस्व लेने पर दीर्घ और प्लुत भी गृहीत होते हैं।

अ = अ + आ + आ३, इ = इ + ई + ई३, उ = उ + ऊ + ऊ३ ,ऋ = ऋ + ॠ + ॠ३, ऌ = ऌ + ॡ + ॡ३

English : - "When the short vowel is mentioned, the long and prolated (pluta) vowels are also to be understood."

सूत्र ७९ – अकारो व्यञ्जनानाम्

हिंदी : व्यञ्जनों का प्रतिनिधि अकार है। अर्थात् व्यञ्जन वर्ण का उच्चारण अकार-सहित होता है – क् + अ = क, ग् + अ = ग, आदि।

English : The vowel 'a' belongs to (or is inherent in) consonants.

सूत्र ८० स्वैरपि

हिंदी : स्वरों से भी व्यञ्जनों का निर्देश होता है।

English : Even independently / by themselves as well.

।। इति सप्तमः पादः ।।

८ पादः– नाभितलप्रकरणम्

सूत्र १ – तत्र नाभिप्रदेशात् प्रयत्नप्रेरितः प्राणो नाम वायुरुर्ध्वमाक्रामन्नुरःआदीनां स्थानानामन्यतमस्मिन् स्थाने प्रयत्नेन विघायंते । विघायंमाणः सोऽपि तत्स्थानानि विहन्ति । तस्मात् स्थानाभिघाताद् ध्वनिः उत्पद्यत आकाशे, सा वणश्रुतिः । स वर्णस्यात्मलाभः ।

हिंदी : नाभि-प्रदेश से प्रयत्न द्वारा प्रेरित होकर **प्राण** नामक वायु ऊपर की ओर चढ़ता है। वह उर (छाती) आदि स्थानों में से किसी एक स्थान पर प्रयत्न से रुकता – विघटित होता है। इस प्रकार विघटित होते हुए वह वायु उन स्थानों को भी आहत करता है। इस प्रकार **स्थान के आघात से** आकाश में एक ध्वनि उत्पन्न होती है – वही **वर्णश्रुति** (वर्ण की श्रुति/सुनाई देना) है। और यही **वर्ण का आत्मलाभ** (वर्ण का अस्तित्व-प्राप्ति) है।

English : There, the air called *prāṇa*, impelled by effort from the navel region, moves upward and strikes, with effort, one of the places such as the chest, etc. While striking, it also affects those places. From the impact at that place, sound is produced in space; that is the audible sound (*varṇa-śruti*). This is the manifestation (realization) of the letter (*varṇa*).

सूत्र २ – तत्र वर्णानामुत्पद्यमाने यदा स्थानकरणप्रयत्नपर्यन्तं परस्परं स्पृशति सा स्पृष्टता ।

हिंदी : वहाँ, वर्णों के उत्पन्न होते समय जब स्थान, करण और प्रयत्न के स्तर तक परस्पर स्पर्श होता है, वही 'स्पृष्टता' कहलाती है।

English : In the production of sounds, when there is mutual contact up to the level of place (sthāna), instrument (karaṇa), and effort (prayatna), that is called *spṛṣṭatā* (contact).

सूत्र ३ – यदेषत् स्पृशति सा ईषत्स्पृष्टता ।

हिंदी जो (वर्ण) थोड़ा-सा स्पर्श करता है, वह 'ईषत्स्पृष्टता' कहलाती है।"

English : That which makes only slight contact is called *īṣat-spṛṣṭatā* (slight contact).

सूत्र ४ – यदा दूरेण स्पृशति सा विवृता ।।

हिंदी जब दूर से (बिना स्पर्श के) स्पर्शन होता है – वह **विवृता** (खुलापन) है।

English : When the contact occurs from a distance, it is called *vivṛtā* (open articulation).

सूत्र ५ – यदा सामीप्येन स्पृशति सा संवृता ।

हिंदी :जब (उच्चारण में) निकटता से स्पर्श होता है, वह 'संवृता' कहलाती है।

English : When the contact occurs with closeness (proximity), it is called *saṁvṛtā* (closed articulation).

सूत्र ६ – एषोऽन्तः प्रयत्नः ।

हिंदी : यह आन्तरिक प्रयत्न है।

English : This is the internal effort (*antaḥ-prayatna*).

संक्षिप्त व्याख्या:

यहाँ 'अन्तः प्रयत्न' से तात्पर्य उन आन्तरिक क्रियाओं से है जो उच्चारण के समय मुख के भीतर (जैसे जिह्वा, तालु आदि के स्तर पर) होती हैं और ध्वनि के प्रकार (स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत, संवृत) को निर्धारित करती हैं।

सूत्र ७ – अथ बाह्यः प्रयत्नः ।

हिंदी : अब बाह्य प्रयत्न (का वर्णन होता है)।

English : Now (begins the description of) external effort (*bāhya-prayatna*).

संक्षिप्त व्याख्या:

यह सूत्र बताता है कि अब आगे **बाह्य प्रयत्न** (जैसे– श्वास, घोष, महाप्राण-अल्पप्राण आदि) का वर्णन किया जाएगा, जो ध्वनि के उच्चारण में बाहर से प्रभाव डालते हैं।

सूत्र ८ – स एवेदानीं प्राणो नाम वायुरुर्ध्वमाक्रम्य मूर्धनि प्रतिहत्य निवृत्तो भवति तदा कोष्ठे संहन्यमानः गलबिलस्य संवृतत्वात् संवारो नाम वर्णधर्मो जायते, विवृत्त्वाद् विवारः ।

हिंदी : वही प्राण नामक वायु अब ऊपर उठकर मूर्धा (सिर के भाग) में आघात करके लौट आता है। तब वह कोष्ठ (भीतर) में संकुचित होता है। गले के मार्ग के संकुचित होने से 'संवार' नामक वर्णधर्म उत्पन्न होता है, और उसके खुलने से 'विवार' (उत्पन्न होता है)।

English : The same air called *prāṇa*, having moved upward, strikes the head (mūrdhan) and then returns. Then, being compressed within the cavity, due to the closure of the throat passage, a phonetic property called *saṃvāra* arises; and due to its opening, *vivāra* arises.

सूत्र ९ – तो संवारविवारो ।

हिंदी : ये (दो) संवार और विवार हैं।

English : These are *saṃvāra* and *vivāra*.

संक्षिप्त व्याख्या:

यह सूत्र पिछले वर्णन का संक्षेप है–

- **संवार** → मार्ग का संकुचन / बंद होना (closure)
- **विवार** → मार्ग का खुलना (opening)

ये दोनों **बाह्य प्रयत्न (external phonetic features)** के प्रकार हैं।

Concise Explanation: This sūtra is a summary of the previous description—

- **Saṃvāra** → contraction or closure of the articulatory passage
- **Vivāra** → opening of the articulatory passage

Both of these are types of **external phonetic efforts**.

सूत्र १० – तत्र यदा कण्ठबिलं संवृतत्वं तदा नादो जायते ।

हिंदी : वहाँ, जब कण्ठ का मार्ग (कण्ठबिल) संकुचित/बंद होता है, तब नाद उत्पन्न होता है।

English : There, when the cavity of the throat (*kaṇṭha-bila*) is in a closed (contracted) state, then sound (*nāda*) is produced.

११ – विवृते तु कण्ठबिले श्वासोऽनुजायते ।

हिंदी : परन्तु जब कण्ठ का मार्ग (कण्ठबिल) खुला होता है, तब श्वास उत्पन्न होता है।

English : But when the cavity of the throat (*kaṇṭha-bila*) is open, then breath (*śvāsa*) is produced.

सूत्र १२ – तौ श्वासनादावनुप्रदानावित्याचक्षते ।

हिंदी : इन दोनों–श्वास और नाद–को 'अनुप्रदान' कहा जाता है।

English : These two—*śvāsa* (breath) and *nāda* (sound/resonance)—are called *anupradāna*.

संक्षिप्त व्याख्या:

- **नाद** → कण्ठ के संकुचन से उत्पन्न ध्वनि (voiced)
- **श्वास** → कण्ठ के खुले होने से निकली वायु (voiceless breath)

इन दोनों को मिलाकर **अनुप्रदान (phonetic contribution/secondary feature)** कहा जाता है,
क्योंकि ये ध्वनि के गुण को निर्धारित करते हैं।

Concise Explanation:

- **Nāda** → sound produced by the contraction of the throat (voiced)

- **Śvāsa** → breath released when the throat is open (voiceless)

Together, these are called **Anupradāna** (phonetic contribution/secondary feature), as they determine the quality of sound.

सूत्र १३ – अन्ये श्वासनादानुप्रदानं व्यञ्जने नादवत् ।

हिंदी : अन्य (आचार्य) कहते हैं कि व्यञ्जनों में श्वास और नाद का अनुप्रदान होता है, (और वे) नादयुक्त (माने जाते हैं)।

English : Others say that in consonants there is the contribution (*anupradāna*) of both breath (*śvāsa*) and sound (*nāda*), and they are considered as possessing sound (voiced).

संक्षिप्त व्याख्या:

- कुछ आचार्यों का मत है कि
  व्यञ्जनों के उच्चारण में **श्वास (breath)** और **नाद (voicing)** दोनों का योगदान होता है
- इसलिए व्यञ्जनों को **नादयुक्त (voiced)** माना जाता है

यह विभिन्न परम्पराओं के मतभेद को दर्शाता है

Concise Explanation:

- Some authorities hold that in the pronunciation of consonants, both **breath (śvāsa)** and **voicing (nāda)** are involved.
- Therefore, consonants are considered to possess **voicing (nāda)**.

This reflects differences of opinion among various traditions.

सूत्र १४ – तत्र यदा नाभिस्थलजघ्वनौ नादोऽनुप्रदीयते तदा नादध्वनिसंसगिंद् घोषो जायते ।

हिंदी : वहाँ, जब नाभि-स्थान और जघन (नीचे के भाग) से उत्पन्न नाद का अनुप्रदान होता है, तब नाद और ध्वनि के संयोग से 'घोष' उत्पन्न होता है।

English : There, when the sound (*nāda*) arising from the navel region and the lower part is contributed, then from the combination of sound and resonance, *ghoṣa* (voicing) is produced.

सूत्र १५ – यदा श्वासोऽनुप्रदीयते तदा श्वास[ध्वनि]संसगिंद् अघोषो जायते ।

हिंदी : जब श्वास का अनुप्रदान होता है, तब श्वास और ध्वनि के संयोग से 'अघोष' उत्पन्न होता है।

English : When breath (*śvāsa*) is contributed, then from the combination of breath and sound, *aghoṣa* (voicelessness) arises.

सूत्र १६ – सा घोषवदघोषता ।

हिंदी : वह (अवस्था) घोषयुक्त और अघोषता (दोनों) होती है।

या

वह घोष तथा अघोष–इन दोनों रूपों वाली होती है।

English : That (state) is both voiced (*ghoṣavat*) and voiceless (*aghoṣatā*).

सूत्र १७ – महित वायौ महाप्राणः ।

हिंदी : जब वायु प्रबल (अधिक) होती है, तब महाप्राण होता है।

English : When the air is strong (forceful), it is called *mahāprāṇa* (aspirated sound).

सूत्र १८ – अल्पे वायावल्पप्राणः ।

हिंदी : जब वायु कम (अल्प) होती है, तब अल्पप्राण होता है।

English : When the air is slight (less), it is called *alpaprāṇa* (unaspirated sound).

सूत्र १९ – साल्पप्राणमहाप्राणता ।

हिंदी : वह अल्पप्राण और महाप्राण – दोनों प्रकार की होती है।

English : That (state) is both *alpaprāṇa* (unaspirated) and *mahāprāṇa* (aspirated).

सूत्र २० – यत्र महाप्राणत्वम् ऊष्माणस्ते ।

हिंदी : जहाँ महाप्राणत्व होता है, वे ऊष्माण (वर्ण) होते हैं।

English : Those in which there is *mahāprāṇatva* (strong aspiration) are called *ūṣmāṇa* (sibilants / fricatives).

सूत्र २१– तत्र यदा सर्वाङ्गानुसारिप्रयत्नस्तीव्रो भवति, तदा गात्राणां निग्रहः, कण्ठबिलस्य चाल्पत्वं, स्वरस्य च वायोस्तीव्रगतित्वाद् रौक्ष्यं भवति – तमुदात्तमाचक्षते ।

हिंदी : वहाँ, जब सम्पूर्ण अंगों के अनुकूल प्रयत्न तीव्र होता है, तब अंगों में तनाव (निग्रह) होता है, कण्ठ का मार्ग कुछ संकीर्ण हो जाता है, और वायु के तीव्र वेग के कारण स्वर में रूक्षता उत्पन्न होती है– उसे 'उदात्त' कहते हैं।

English : There, when the effort following all the organs is intense, there is restraint (tension) in the organs, the cavity of the throat becomes somewhat narrow, and due to the rapid movement of air, harshness arises in the sound — that is called *udātta* (raised/accented tone).

संक्षिप्त व्याख्या:

- प्रयत्न (effort) **तीव्र** होता है
- शरीर/अंगों में **तनाव** आता है

- कण्ठ मार्ग थोड़ा **संकीर्ण** होता है
- वायु तेज़ चलती है → स्वर में **रूक्षता/तेज़पन** आता है

यही स्थिति **उदात्त स्वर (high/raised accent)** की होती है।

Concise Explanation:

- The **articulatory effort (prayatna)** becomes intense
- There is **tension in the speech organs/body**
- The **throat passage becomes slightly constricted**
- The **airflow becomes stronger**, resulting in sharpness or intensity in the sound

This is the condition characteristic of the **Udātta (raised/high accent)**.

सूत्र २२– यदा मन्दः प्रयत्नो भवति तदा गात्राणां प्रसन्नत्वं, कण्ठबिलस्य च महत्त्वं स्वरस्य च वायोर्मन्दगतित्वात् स्निग्धता भवति । तमनुदात्तमाचक्षते ।

हिंदी : जब प्रयत्न मन्द होता है, तब अंगों में प्रसन्नता (शिथिलता) होती है, कण्ठ का मार्ग विस्तृत हो जाता है, और वायु की मन्द गति के कारण स्वर में स्निग्धता (मृदुता) उत्पन्न होती है – उसे 'अनुदात्त' कहते हैं।

English : When the effort is mild, there is relaxation in the organs, the cavity of the throat becomes wide, and due to the धीमी (slow) movement of air, smoothness arises in the sound — that is called *anudātta* (low/unaccented tone).

संक्षिप्त व्याख्या:

- प्रयत्न **मन्द (low effort)**
- अंगों में **शिथिलता / relaxation**
- कण्ठ मार्ग **खुला / विस्तृत**
- वायु धीमी चलती है → स्वर **मृदु (soft, smooth)**

यही **अनुदात्त स्वर (low accent)** की पहचान है।

Concise Explanation:

- The **articulatory effort (prayatna)** is low
- There is **relaxation in the speech organs**
- The **throat passage remains open and expanded**
- The **airflow is gentle**, producing a soft and smooth sound

This is characteristic of the **Anudātta (low accent)**.

सूत्र २३ – उदात्तानुदात्तसन्निकर्षात् स्वरित इति ।

हिंदी : उदात्त और अनुदात्त के सन्निकर्ष (निकटता/संयोग) से 'स्वरित' होता है।

English : *Svarita* arises from the proximity (combination) of *udātta* and *anudātta*.

संक्षिप्त व्याख्या:

- **उदात्त (high tone)** + **अनुदात्त (low tone)**
- इन दोनों के मेल/संक्रमण से
  → **स्वरित (mixed or falling tone)** बनता है

यह एक प्रकार का **संयुक्त स्वर-उच्चार (combined accent)** है

Concise Explanation:

- **Udātta (high tone)** + **Anudātta (low tone)**
- From the combination or transition of these two
  → **Svarita (mixed or falling tone)** is produced

It is a type of **combined accent**.

सूत्र २४ –स एवं प्रयत्नोऽभिनिवृत्तः कुत्स्नः प्रयत्नो भवति ।

हिंदी : इस प्रकार यह प्रयत्न सम्यक् रूप से निवृत्त (पूर्ण) होकर सम्पूर्ण प्रयत्न बन जाता है।

English : Thus, this effort, having been properly completed, becomes the complete (total) effort.

सूत्र २५ – स एवमापिशलेः पञ्चदशभेदाख्या वर्णधर्मा भवन्ति ।

हिंदी : इस प्रकार आपिशलि के अनुसार वर्णधर्मों के पन्द्रह भेद माने जाते हैं।

English : "Thus, according to Āpiśali, there are fifteen types of phonetic properties (*varṇa-dharmas*)."

सूत्र २६ – तद्यथा – स्पृष्टता ईषत्स्पृष्टता विवृता संविवृता च । संवारविवारो श्वासनादौ घोषवदघोषता । अल्पप्राणमहाप्राणता उदात्तानुदात्तस्वरिता इति ।

हिंदी : वे इस प्रकार हैं – स्पृष्टता, ईषत्स्पृष्टता, विवृता, संविवृता, संवार, विवार, श्वास, नाद, घोषवत्ता, अघोषता, अल्पप्राणता, महाप्राणता, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

English : They are as follows — *spṛṣṭatā* (complete contact), *īṣat-spṛṣṭatā* (slight contact), *vivṛtā* (open articulation), *saṁvivṛtā* (partially open articulation), *saṁvāra* (closure), *vivāra* (opening), *śvāsa* (breath), *nāda* (voicing/resonance), *ghoṣavat* (voiced), *aghoṣatā* (voicelessness), *alpaprāṇatā* (unaspirated), *mahāprāṇatā* (aspirated), *udātta* (high tone), *anudātta* (low tone), and *svarita* (mixed/falling tone).

सूत्र २७ – इदानीं शिक्षाग्रन्थः श्लोकरूपसंहिल्यते –

हिंदी अब शिक्षाग्रन्थ को श्लोक रूप में संक्षेप किया जाता है।

English : Now, the Śikṣā text is being condensed into verse form (śloka).

सूत्र २८ – अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा । जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ।।

हिंदी : वर्णों के आठ स्थान हैं – उरः (छाती), कण्ठ (गला), शिरः (सिर), जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु।

English : There are eight places of articulation of sounds — the chest (*uraḥ*), throat (*kaṇṭha*), head (*śiras*), root of the tongue (*jihvāmūla*), teeth (*danta*), nose (*nāsikā*), lips (*oṣṭha*), and palate (*tālu*).

सूत्र २९ – स्पृष्टत्वमीषत्स्पृष्टत्वं संवृतत्वं तथैव च । विवृतत्वं च वर्णानामन्तःकरणमुच्यते ।।

हिंदी : स्पृष्टता, ईषत्स्पृष्टता, संवृतता तथा विवृतता – ये वर्णों का आन्तरिक करण (*अन्तःकरण*) कहलाते हैं।

English : Complete contact (*spṛṣṭatva*), slight contact (*īṣat-spṛṣṭatva*), closed articulation (*saṁvṛtatva*), and open articulation (*vivṛtatva*) are called the internal effort (*antaḥ-karaṇa*) of sounds.

सूत्र ३० – कालो विवारसंवारी श्वासनादावघोषता । घोषोऽल्पप्राणता चैव महाप्राणः स्वरास्त्रयः ।।

हिंदी : काल, विवार, संवार, श्वास, नाद, अघोषता, घोष, अल्पप्राणता, महाप्राणता – और तीन स्वर (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित) — ये सभी वर्णों के बाह्य धर्म हैं।

English : Time (*kāla*), opening (*vivāra*), closure (*saṁvāra*), breath (*śvāsa*), resonance (*nāda*), voicelessness (*aghoṣatā*), voicing (*ghoṣa*), unaspiratedness (*alpaprāṇatā*), aspiratedness (*mahāprāṇatā*), and the three accents (*udātta, anudātta, svarita*) — these are the external properties (features) of sounds.

सूत्र ३१ – बाह्यं करणाहुस्तान् वर्णिनां वर्णवेदिनः ।।

हिंदी : बाह्य अंगों को वर्णों के ज्ञाता (वर्णविद) बाह्य करण कहते हैं।

English : The external organs are called *bāhya karaṇa* (external articulators) by the experts of sounds (*varṇavedins*).

।। इति अष्टमः पादः ।।

।। इति प्रथमोऽध्यायः – ध्वनिप्रकरणम् समाप्तम् ।।

अध्याय २ (लिपिशाखायाम्)

पाद १ – वर्णलिपिप्रकरणंम्

सूत्र १ – अ आ आ३ इ ई ई३ उ ऊ ऊ३ ऋ ॠ ॠ३ ऌ ॡ ॡ३ ए ऐ ऐ३ ओ औ औ३ ।

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न ।

प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह ।

ं ः ँ ् ऽ ५ ॐ। ळ क्ष ज्ञ त्र श्र ॥

सूत्र १:

हिंदी : इसमें सभी स्वर (ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत सहित), व्यंजन (वर्गीय और अन्तःस्थ/ऊष्म) तथा अयोगवाह चिन्ह (अनुस्वार, विसर्ग, चन्द्रबिन्दु, हलन्त, अवग्रह, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय) और संयुक्त वर्ण (ळ, क्ष, ज्ञ, त्र, श्र) का समावेश किया गया है।

English : This includes all vowels (short, long, and pluta forms), consonants (grouped and semi-vowels / sibilants), as well as auxiliary signs (anusvāra, visarga, chandrabindu, halant, avagraha, jihvāmūlīya, upadhmānīya), and conjunct letters (ḷa, kṣa, jña, tra, śra).

सूत्र २ – क्ष = क् + ष । ज्ञ = ज् + ञ । त्र = त् + र । श्र = श् + र । इति द्विव्यञ्जनसंयोगेन संयुक्तवर्णाः भवन्ति॥

हिंदी :

- क्ष = क् + ष
- ज्ञ = ज् + ञ
- त्र = त् + र
- श्र = श् + र

ये सभी दो व्यंजनों के मेल से बने हैं, इसलिए इन्हें संयुक्त वर्ण कहा जाता है।

English :

- kṣa = k + ṣa
- jña = j + ña
- tra = t + ra
- śra = śa + ra

These are formed by the combination of two consonants, hence called conjunct letters.

सूत्र ३ – ळ इति स्वतंत्रवर्णः, ऽ इत्यकारलोपसूचकः अवग्रहः॥

हिंदी: ळ स्वतंत्र वर्ण है; और "ऽ" अकार के लोप को सूचित करने वाला अवग्रह-चिह्न है।

English : Kṣa, jña, tra, and śra are conjunct letters; ḷa is an independent letter; and "ऽ" is the avagraha sign indicating the elision of 'a'.

सूत्र ४ – नासिक्यादिचिह्नानां विस्तरः वैदिकपाठे ज्ञेयः॥

हिंदी: नासिक्य आदि चिन्हों का विस्तार वैदिकपाठ में जाना चाहिए।

English: The detailed treatment of nasal and related signs is to be understood in Vedic recitation texts.

॥ स्वर द्विरूप नियमः ॥

सूत्र ५ – शब्दादौ स्वर आयाति, स्वतन्त्ररूपमेव हि । व्यञ्जनोत्तर मात्रारूपं, द्विधा स्वरो विधीयते ॥

हिंदी :शब्द के आरम्भ में स्वर अपने स्वतंत्र रूप में आता है। और व्यञ्जन के बाद वह मात्रारूप में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार स्वर दो प्रकार से माना जाता है।

English : At the beginning of a word, a vowel appears in its independent form. After a consonant, it takes the form of a dependent sign (mātrā). Thus, a vowel is prescribed in two forms.

॥ – अकार नियमः ॥

सूत्र ६ –अकारो व्यञ्जने नित्यं, अन्तर्गत एव हि । पृथक् न लिख्यते क्वापि, स्वाभाविकः सदा भवेत् ॥

हिंदी : अकार प्रत्येक व्यञ्जन में सदा अंतर्निहित रहता है। उसे कभी अलग से नहीं लिखा जाता, वह स्वाभाविक रूप से उपस्थित होता है।

English : The vowel 'a' is always inherently present within consonants. It is never written separately and exists naturally by default.

॥ आकार मात्रा नियमः ॥

सूत्र ७ – आकारः व्यञ्जनस्य दक्षिणपार्श्वे लिख्यते। स ऊर्ध्वाधोरेखया युक्तः स्पष्टः सुदृश्यश्च भवति॥

हिंदी : आकार (ा) व्यञ्जन के दाहिने (दक्षिण) पार्श्व में लिखा जाता है। वह ऊपर-नीचे की रेखा से युक्त होकर स्पष्ट और सुगम रूप से दिखाई देता है।

English : The long vowel 'ā' (ा) is written on the right side of a consonant. It is marked with a vertical extension, making it clear and distinctly visible.

॥ इकार ईकार नियमः ॥

सूत्र ८ – इकारो वामभागे स्यात्, ईकारो दीर्घरूपतः । व्यञ्जनात् पूर्वं लिख्येत, परं उच्चारणं भवेत् ॥

हिंदी : इकार (ि) व्यञ्जन के बाएँ भाग में लिखा जाता है। ईकार (ी) उसका दीर्घ रूप होता है। दोनों ही व्यञ्जन से पहले लिखे जाते हैं, किन्तु उनका उच्चारण बाद में होता है।

English : The short vowel ‘i’ (ि) is written on the left side of a consonant. The long vowel ‘ī’ (ी) is its extended form. Both are written before the consonant, yet pronounced after it.

॥ उकार ऊकार नियमः ॥

सूत्र ९ – उकारऊकारौ अधः, व्यञ्जनस्य नीचे लिख्येत् । ह्रस्वदीर्घभेदेन च, स्पष्टं लेखनमाचरेत् ॥

हिंदी : उकार (ु) और ऊकार (ू) व्यञ्जन के नीचे लिखे जाते हैं। इन दोनों का ह्रस्व और दीर्घ भेद स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।

English : The vowels ‘u’ (ु) and ‘ū’ (ू) are written beneath the consonant. Their distinction as short and long forms should be clearly represented in writing.

॥ ऋकार ऌकार नियमः ॥

सूत्र १० – ऋकारो अधोभागे च, वक्राकृत्या लिख्यते । ऌकारो विशिष्टरूपः, उभौ स्पष्टौ पृथक् पृथक् ॥

हिंदी : ऋकार (ृ) व्यञ्जन के नीचे वक्र (मुड़ी हुई) आकृति में लिखा जाता है। ऌकार (ॢ) उसका एक विशेष रूप होता है। दोनों को स्पष्ट रूप से अलग-अलग लिखना चाहिए।

English : The vowel ‘ṛ’ (ृ) is written below the consonant in a curved form. The vowel ‘ḷ’ (ॢ) represents its distinct variant. Both should be written clearly and distinguished separately.

॥ एकार ऐकार नियमः ॥

सूत्र ११ – एकारो उपरि रेखा, ऐकारो द्विरेखया च । शिरोरेखोपरि लेख्यं, स्पष्टभेदेन नित्यशः ॥

हिंदी : एकार (े) शिरोरेखा के ऊपर एक रेखा से लिखा जाता है। ऐकार (ै) वहीं दो रेखाओं के साथ लिखा जाता है। दोनों का भेद सदा स्पष्ट रूप से करना चाहिए।

English : The vowel ‘e’ (े) is written above the headline with a single stroke. The vowel ‘ai’ (ै) is written there with a double stroke. Their distinction should always be clearly maintained in writing.

॥ ओकार औकार नियमः ॥

सूत्र १२ – ओकारो उपरि वामे च, औकारो द्विचिह्नयुक्तम् । स्पष्टभेदेन लिख्येत, न परस्परसादृशम् ॥

हिंदी : ओकार (ो) शिरोरेखा के ऊपर बाएँ भाग में लिखा जाता है। औकार (ौ) वहीं दो चिह्नों के साथ लिखा जाता है। दोनों का भेद स्पष्ट रूप से करना चाहिए, वे एक-दूसरे के समान नहीं होने चाहिए।

English : The vowel 'o' (ो) is written above the headline towards the left side. The vowel 'au' (ौ) is formed there with a double marking. Their distinction must be clearly maintained, and hey should not resemble each other.

॥ प्लुत लेखन नियमः ॥

सूत्र १३ – दीर्घलिप्यनन्तरं "३" इत्यङ्के संयुक्ते स्वरः प्लुतो भवति॥

हिंदी : दीर्घ स्वर के बाद "३" अंक के जुड़ने पर वह स्वर प्लुत (तीन मात्रा वाला) हो जाता है।

English : When the numeral "3" is added after a long vowel in writing, that vowel becomes pluta (of three morae).

॥ व्यञ्जन लेखन नियमः ॥

॥ अकार अन्तर्गत नियमः ॥

सूत्र १४ – व्यञ्जनं सर्वमाकारं, अकारोऽन्तर्गतः सदा । शुद्धव्यञ्जने हलन्तः, अन्यथाकार एव हि ॥

हिंदी : प्रत्येक व्यञ्जन स्वभावतः अकार से युक्त होता है। अकार उसमें सदा अन्तर्निहित रहता है। जब शुद्ध व्यञ्जन दिखाना हो, तब हलन्त (्) का प्रयोग किया जाता है; अन्यथा अकार बना रहता है।

English : Every consonant inherently contains the vowel 'a' by nature. This 'a' remains inherently present within it at all times. To denote a pure consonant, the halant (virāma) is employed; otherwise, the inherent 'a' persists.

॥ संयुक्ताक्षर लेखन नियमाः ॥

॥ हलन्त नियमः ॥

सूत्र १५ –व्यञ्जनं यदि संयुक्तं, हलन्तेन विभज्यते । अर्धाक्षरं तदा लेख्यं, नियमः सनातनः ॥

हिंदी : जब व्यञ्जन संयुक्त होते हैं, तब हलन्त के द्वारा उनका संयोजन किया जाता है। उस स्थिति में अर्धाक्षर लिखा जाता है। यह प्राचीन (सनातन) नियम है।

English : When consonants combine, they are joined through the use of the halant (virāma). In such cases, a half-form of the consonant is written. This is the traditional and established rule.

॥ अधोलेखन नियमः ॥

सूत्र १६ – पूर्वं अक्षरमर्धं स्यात्, उत्तरं पूर्णमेव च । अधोभागे संयुज्येत, संयुक्तं तद्विधीयते ॥

हिंदी : पहला (पूर्व) व्यञ्जन अर्धरूप में लिखा जाता है। दूसरा (उत्तर) व्यञ्जन पूर्ण रूप में रहता है। नीचे के भाग में संयोजन द्वारा संयुक्ताक्षर बनता है।

English : The preceding consonant is written in its half-form. The following consonant remains in its full form. By joining them in the lower part, a conjunct letter is formed.

॥ रेफ नियमः ॥

सूत्र १७ – रेफः पूर्वसंयुक्तः, उपरि चिह्नं विधीयते । रेफरूपेण लिख्येत, यथा कर्म धर्म इति ॥

हिंदी : जब 'र्' पहले संयुक्त होता है, तब उसे ऊपर चिह्न के रूप में लिखा जाता है। उसे रेफ के रूप में लिखा जाता है, जैसे – कर्म, धर्म।

English : When 'r' occurs as the first element in a consonant cluster, it is represented as a mark above. It is written in the form of repha, as in — *karma*, *dharma*.

॥ रेफरोत्तर नियमः ॥

सूत्र १८ – रेफः उत्तरसंयुक्तः, अधो वक्राकृतिर्भवेत् । पादरूपेण लिख्येत, यथा प्र क्र ग्र इति ॥

हिंदी : जब 'र्' बाद में संयुक्त होता है, तब वह नीचे वक्र (मुड़ी हुई) आकृति में लिखा जाता है। उसे पादरूप में लिखा जाता है, जैसे – प्र, क्र, ग्र।

English : When 'r' occurs as the following element in a consonant cluster, it is written below in a curved form. It appears in a subjoined (foot-like) form, as in — *pra*, *kra*, *gra*.

॥ विशिष्टसंयुक्त नियमः ॥

सूत्र १९ – क्ष त्र ज्ञ श्र विशिष्टाः, स्वरूपेण लिख्यन्ते । न हलन्तेन योज्यन्ते, स्वतन्त्ररूपमेव हि ॥

हिंदी : क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ये विशेष संयुक्ताक्षर हैं। इन्हें अपने निर्धारित रूप में लिखा जाता है, हलन्त से नहीं जोड़ा जाता। इनका लेखन स्वतंत्र रूप से ही किया जाता है।

English : The conjuncts kṣa (क्ष), tra (त्र), jña (ज्ञ), and śra (श्र) are special forms. They are written in their established shapes and are not formed merely by the use of the halant. Their representation is treated as distinct and independent.

॥ अयोगवाह लेखन नियमाः ॥

॥ अनुस्वार नियमः ॥

सूत्र २० – अनुस्वारः बिन्दुरूपेण, अक्षरोपरि लिख्यते । पञ्चमवर्णस्थाने च, न पृथक् लेखनं भवेत् ॥

हिंदी : अनुस्वार (ं) बिन्दु के रूप में अक्षर के ऊपर लिखा जाता है। पञ्चम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) के स्थान पर इसका प्रयोग होने पर अलग से वर्ण नहीं लिखा जाता।

English : The anusvāra (ṃ) is written as a dot above the syllable. When it stands in place of a nasal of the fifth class, a separate consonant is not written.

॥ विसर्ग नियमः ॥

सूत्र २१ – विसर्गः द्विबिन्दुरूपेण, अक्षरपार्श्वे लिख्यते । स्पष्टं सुदृश्यं लेख्यं, न लुप्तं न विकृतम् ॥

हिंदी : विसर्ग (ः) दो बिन्दुओं के रूप में अक्षर के पास लिखा जाता है। इसे स्पष्ट और सुगम रूप से लिखना चाहिए, न तो इसे लुप्त करना चाहिए और न ही विकृत।

English : The visarga (ḥ) is written as two dots beside the syllable. It should be written clearly and distinctly, neither omitted nor distorted.

॥ चन्द्रबिन्दु नियमः ॥

सूत्र २२– अनुनासिकस्य लिपिचिह्नं चन्द्रबिन्दुः ँ इति।"॥ अँ इँ उँ इति स्पष्टं, न बिन्दुमात्रेण लिख्यते ॥

हिंदी : अनुनासिक का लिपि-चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है। अँ, इँ, उँ आदि को स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए, केवल बिन्दु (ं) से नहीं।

English : The orthographic sign of nasalization is the chandrabindu (ँ).
Forms such as ã, ĩ, ũ, etc., should be written clearly, not merely with a dot (anusvāra).

॥ अवग्रह नियमः ॥

सूत्र २३ – अवग्रहः ऽ इति चिह्नं, संहितायां प्रयुज्यते । अकारलोपे स्थाने च, स्पष्टं लिख्येत नित्यशः ॥

हिंदी: अवग्रह ऽ चिह्न – संहिता में अकार लोप के स्थान पर – स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।

English : The avagraha is the sign "ऽ", used in continuous (saṃhitā) recitation. It is written to indicate the elision of the vowel "a", and should be written clearly at its place.

॥ जिह्वामूलीय उपध्मानीय नियमः ॥

सूत्र २४ – ᳘क जिह्वामूलीयः, ᳪप उपध्मानीयः तथा । विसर्गस्थाने विशिष्टे, स्वरूपेण लिख्यते ॥

हिंदी: ᳘क जिह्वामूलीय और ᳪप उपध्मानीय – विसर्ग के विशिष्ट स्थान पर – अपने स्वरूप में लिखे जाते हैं।

English : The sign ᳘ represents the *jihvāmūlīya*, and ᳪ represents the *upadhmānīya*. In specific positions of the visarga, they are written in their respective forms.

।। इति प्रथमः पादः ।।

पाद २

अङ्कलिपिप्रकरणम्

सूत्र १ – वर्णस्य ध्वनिरूपम् अपरिवर्तनीयम्, लिपिरूपं तु परिवर्तनशीलम् ॥

हिन्दी : वर्ण की ध्वनि सदा एक रहती है – अपरिवर्तनीय। किन्तु उसका लिपि-रूप काल और स्थान के अनुसार बदलता रहता है।

English : The phonetic form of a letter is immutable, but its script-form changes across time and place.

सरल अर्थ: ध्वनि ईश्वरनिर्मित है – इसलिए अपरिवर्तनीय। लिपि मनुष्यनिर्मित है – इसलिए परिवर्तनशील। 'अ' की ध्वनि सदा 'अ' रही – किन्तु उसकी आकृति ब्राह्मी से देवनागरी तक बदलती रही।

सूत्र २ –:ब्राह्म्यादिभ्यः लिपिविकासः॥

हिंदी : ब्राह्मी आदि से लिपि का विकास हुआ है।

English : The development of script originates from Brāhmī and others.

सूत्र ३ –:शिरोरेखा देवनागर्याः विशेषलक्षणम् ॥

हिन्दी : शिरोरेखा देवनागरी लिपि की विशेष पहचान है।

English : The headline (Shirorekha) is the distinctive feature of Devanagari script.

सरल अर्थ: ताड़पत्र पर नरकट से लिखने की परम्परा से शिरोरेखा उत्पन्न हुई। नरकट को ऊपर से खींचने पर स्वाभाविक रूप से यह रेखा बन जाती थी। आज यही शिरोरेखा देवनागरी की पहचान है।

अङ्क-सिद्धान्तः

सूत्र ४ – वर्णेषु नाङ्काः, मात्रागणनायां तु ते उपयुज्यन्ते॥

हिंदी: वर्णों में अंक नहीं होते, पर मात्रा की गणना में उनका उपयोग किया जाता है।

English : Numbers do not form part of the letters; however, they are used in the calculation of mātrās (units of measure).

सूत्र ५ – देवनागर्यङ्काः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ० प्रयोज्याः॥

हिंदी : देवनागरी के अंक (१-९, ०) का प्रयोग किया जाना चाहिए।

English: Devanagari numerals (1–9, 0) should be used.

सूत्र ६ – छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते । ज्योतिषामयनं चक्षुः निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥ शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् । तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥

हिंदी : छन्द वेद के दो पैर हैं, और कल्प उसके हाथ कहे जाते हैं। ज्योतिष वेद की आँख है, तथा निरुक्त को उसका कान कहा गया है। शिक्षा वेद की नाक है, और व्याकरण को उसका मुख माना गया है। इसलिए जो व्यक्ति वेद को उसके अंगों सहित अध्ययन करता है, वह ब्रह्मलोक में सम्मान प्राप्त करता है।

English : Prosody (Chandas) is said to be the feet of the Veda, and Kalpa is its hands. Astrology (Jyotisha) is its eyes, and Nirukta is called its ears. Śikṣā is the nose of the Veda, and grammar (Vyākaraṇa) is considered its mouth. Therefore, one who studies the Veda along with all its limbs attains greatness in Brahmaloka.

सूत्र ७ –: नटराजः वर्णविज्ञानप्रतीकः।

श्लोकः: नटराजस्य डमरुर्ध्वनिरुदीरितः सदा, अग्निरूपा लिपिः प्रोक्ता वर्णार्थोऽभयमुद्रया। गजहस्तः सदा ज्ञेयोऽध्ययनस्य प्रवर्तकः, उत्थितः पादो वेदः स्यात् तान्त्रिकोऽपस्मारस्थितः। प्रभामण्डलमेवोक्तं लिपिविकासलक्षणम्॥

हिंदी अर्थ : सूत्र: नटराज वर्णविज्ञान का प्रतीक हैं।

श्लोक: नटराज के डमरु से सदा ध्वनि उत्पन्न होती है, जिसे ज्ञान की मूल ध्वनि माना जाता है। अग्नि के समान लिपि को वर्णों के अर्थ को प्रकट करने वाली कहा गया है, और अभयमुद्रा सुरक्षा तथा निर्भयता का संकेत देती है। गज-हस्त (हाथ की मुद्रा) अध्ययन और ज्ञान के प्रवर्तन का प्रतीक माना गया है। उठा हुआ पैर वेद के ज्ञान के प्रवाह को दर्शाता है, जबकि दूसरा पैर तांत्रिक आधार (अज्ञान/अवरोध पर नियंत्रण) का प्रतीक है। प्रभामण्डल (चारों ओर का तेज) लिपि-विकास का संकेत माना गया है।

English : Sūtra: Nataraja is a symbol of phonetic science (Varna-vigyana).

Verse: The drum (damaru) of Nataraja continuously produces primordial sound, which is regarded as the origin of knowledge. The script, represented like fire, is said to reveal the meaning of letters, while the abhaya mudra symbolizes protection and fearlessness. The elephant-trunk-like hand is considered a promoter of learning and study. The raised foot represents the flow of Vedic knowledge, while the other foot symbolizes control over ignorance or obstructive forces. The surrounding halo (prabhāmandala) is regarded as a sign of the evolution of scripts.

सूत्र ८ –: अयं ग्रन्थः "वर्णशिक्षा" नामकः सर्वजनहिताय, उपग्रन्थाः विदुषां विशेषाध्ययनाय॥

हिंदी : यह ग्रन्थ "वर्णशिक्षा" नामक है, जो सभी के हित के लिए है, और उपग्रन्थ विद्वानों के विशेष अध्ययन के लिए हैं।

English : This text named "Varna Shiksha" is for the benefit of all, while its sub-texts are for specialized study by scholars.

सूत्र ९ –: वर्णमयं मूलं ब्रह्म तत्त्वं प्रकीर्तितम्। यः स्ववर्णं न जानाति सूक्ष्मज्ञानं न विन्दति॥ वर्णब्रह्मणि अज्ञाते कथं निर्गुणमव्ययम्। अल्पबुद्धिः कथं वेत्ति निराकारं परं ब्रह्म॥

हिंदी : वर्णमय ब्रह्म ही मूल तत्त्व है। जो अपने वर्णों को नहीं जानता, वह सूक्ष्म ज्ञान को नहीं पा सकता। जब वर्ण-ब्रह्म ही अज्ञात है, तो निर्गुण अव्यय को कैसे जानेगा? अल्पबुद्धि निराकार परब्रह्म को कैसे समझ सकता है?

सूत्र १०– वर्णविना न व्याकरणं न कल्पो न निरुक्तकम्। न ज्योतिषं न छन्दांसि वेदा अपि तदाश्रिताः॥ तस्मात् प्रयत्नपूर्वं तु गुरोः समीपमागत्य। विनयेनाधीयीत शिक्षा सर्वविद्याप्रसाधिनी॥

हिंदी : वर्णों के बिना न व्याकरण, न कल्प, न निरुक्त, न ज्योतिष और न ही छन्द संभव हैं; स्वयं वेद भी इन्हीं पर आधारित हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रयत्नपूर्वक गुरु के पास जाकर विनम्रता से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, जो सभी विद्याओं को सिद्ध करने वाली है।

English : Without letters, there is no grammar, no Kalpa, no Nirukta, no Jyotisha, nor Chandas; even the Vedas depend upon them. Therefore, one should approach the teacher with effort and humility to study Śikṣā, which accomplishes all knowledge.

सूत्र ११–: पाणिनीयशिक्षायाः सम्पूर्णः ध्वनिभागः अस्मिन् ग्रन्थे समाहितः अस्ति, शेषं च विषयं अन्यग्रन्थेभ्यः गुरुपरम्परया च प्राप्तं ज्ञानम् अस्ति॥

हिंदी : इस ग्रन्थ में पाणिनीय शिक्षा का सम्पूर्ण ध्वनि-भाग समाहित है, और शेष विषय अन्य ग्रन्थों तथा गुरु-परम्परा से प्राप्त ज्ञान पर आधारित है।

English : This work contains the complete phonetic section of Pāṇinian Śikṣā, while the remaining content is derived from other texts and knowledge received through the guru tradition.

सूत्र १२ –: शिवोपदिष्टा विद्येयं अपिशल्यादिसंस्कृता। पाणिनिना निबद्धा च दयानन्देन लब्धता॥
युधिष्ठिरेण मीमांसकेन पूर्णतया प्रकाशिता। सा वर्णविद्या जयति निरन्तरं प्रवाहिता॥

हिंदी : यह विद्या भगवान शिव द्वारा उपदिष्ट है, अपिशलि आदि ऋषियों द्वारा विकसित की गई है, पाणिनि जी द्वारा निबद्ध की गई है, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा प्राप्त एवं पुनः प्रकाशित की गई है, तथा युधिष्ठिर मीमांसा के द्वारा पूर्ण रूप से व्यवस्थित/प्रकाशित की गई है। यह वर्णविद्या निरन्तर प्रवाहित होकर जययुक्त है।

English : This knowledge is taught by Lord Shiva, developed by sages such as Apishali, compiled by Pandit Panini Ji, received and re-published by Swami Dayanand Saraswati Ji, and fully systematized and explained by the Yudhishthira Mīmāṃsaka tradition. This science of letters flows continuously and is ever victorious.

।। इति द्वितीयः पादः ।।

।। इति द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ।।

इति वर्णविज्ञाने वर्णशिक्षा समाप्ता॥

हिंदी : वर्णविज्ञान में वर्णशिक्षा समाप्त हुई

English: The section on Varṇaśikṣā within Varṇa-vijñāna has been completed.

इति शिवार्पणमस्तु॥

शिक्षा-वेदाङ्ग-श्रृंखला
SHIKSHA VEDANGA SERIES

ॐ

लेखक परिचय

निरञ्जन प्रधान

NIRANJAN PRADHAN

Vedic Scholar • Brahmapur (Odisha)

तीन वर्षीय गुरुकुल प्रशिक्षण प्राप्त, विगत ११ वर्षों से
संस्कृत-ध्वनिशास्त्र, वैदिक भाषाविज्ञान एवं भारतीय
ज्ञान-परम्परा के स्वतन्त्र अध्येता।

मार्गदर्शन : आचार्य विजयपाल विद्यावारिधि,
आचार्य प्रदीप शास्त्री एवं आचार्य उदयन।

प्रमुख अध्ययन-क्षेत्र

- वर्णविज्ञान
- वेदाङ्ग ज्योतिष
- शिक्षा-वेदाङ्ग
- गृह्यसूत्र-अध्ययन

✦ अतिरिक्त शोध-कार्य ✦

"वैदिक सभ्यता की प्राचीनता —
एक खगोल, गणितीय एवं पुरातात्त्विक विश्लेषण"
खगोलशास्त्र, गणित एवं पुरातत्त्व के आधार पर
वैदिक परम्परा की प्राचीनता का विश्लेषण।

वर्ण-विज्ञान-सूत्रम्

VARNA VIGYAN SUTRAM

वर्ण ◆ ध्वनि ◆ लिपि ◆ अर्थ ◆ व्यवहार